



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १४४ म अंक १५ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४४)



ए अंकमे अछि:-

बर्दा या उत्केय लयव घबड़ गीत

( गखव संग्रह)

खगदोषद सा मय



श्रीति प्रकाशिन



•—•  
•—•

### सर्ग

अ “ नदी या तलेह रुमर घवाड ीपर” सादर सर्गित अछि हूक सरहक श्रीचका कमनमे जे अणन  
गार्ष्ट पानिसँ दूर लेखरौक रिछोह अणन कलेजमे सर्गले छथि ।

•—•  
•—•

दू अथर



मनुषीविह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आदकीय बमिकजन सादर प्रणाम । अपलक हाथमे हमर कोला तबहक ग्र पहिन पोथी अछि । हमरा हेतु ग्र हार्दिक हर्थक गप्प अछि । नीक रोजाए केहेन से तँ आरँ अपल लोकनि कहँ । जेनाकी अपल सब जलैत छी गजन मल प्रेम, प्रेम मल जीरण, आ एहिठाम हमर प्रेम अर्थात हमर जीरण मिथिलाक माँट पाणिमँ अछि । एहि संग्रहमे हम मिथिलाक माँट पाणिमँ सरोकार बथेत विषयसँसु पवमल छी । समाजक स्थिति देखारैक प्रणाम केले छी । कोला बचनसँ जँ किनको मोषकेँ ठेस पहुँचनि तँ हम क्षमाप्राथी छी अग्रथा नहि लेरँ, ग्र मात्र संजोग अछि ।

हम गजनक गुताज नहि, मात्र एकटा रिद्यार्थी छी । गजन राकबणक रा गजन नियमारनीक पूर्ण एरँ शुद्ध ज्ञान सिधेक गडुक, रिद्यार्थी, मोधकर्ता आ बामिकजनसँ आग्रह जे ओ सब अणचिहाव आख

(<http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.com>) रँगक अग्रगण्य आ मल कबथि । हम अण अणु गजनक ज्ञान संगे अपलक समझ उगस्थित छी तँ एहि संग्रहमे रहँत बाम रार्थिक आ राकबण सँसृष्टित देखे भन् सकेए । आशि अछि अपल सब कोला तबहक गनती लेन अज्ञानी ज्ञानि क्षमा करैत हमरा सुचित कवरँ जालिसँ हम अण अज्ञानताकेँ दुब कए आगुनँ अपलक सेरामे आँव शुद्ध आ नीक गजन प्रसूत कवरँ ।

हमर साहित्यक रँस कोला रँसी नहि भेनए । रिद्यार्थी जीरणमे करिता लेखनमे कटि छन रुदा गृहसु जीरणमे सभटा रिसवा गेनहँ । अक्टूबर २०११, श्री गजेन्द्र ठाकुरजी रिदेह ग्रुपसँ जोडननि, आ ओतएँ हमर साहित्यक जीरण शुक भेन । रिदेहपब सभकेँ नीक-नीक निथेत देखे कए हमरो भितबक मबन साहित्यक मिलन राहब निकनन, दु-तीनटा करिता निथ रिदेहक देरान पब देनिथे । पाठकक राह-रानी पढ़ा नीक नागन । आगु निथेक प्रेवणा भेठेन । संगे अण करिताकेँ रिदेह ग्र-पत्रपब छपन देखे आँव खुशी भेठेन । रुदा हमर मैथिली भाषाक पक्ष रँसु कमजोब छन, एथला अछि । नरवर २०११ मे गकरँव आशीय अणचिहावजी रिदेह ग्रुपकेँ आशिर्वाद भेठे भेनाह आ ओहिठामसँ हुनक माझदर्शनमे शुक भेन हमर गजन आ मैथिली निथेक यात्रा । ओकर रादक सभ किछ अपल लोकनिकेँ समझ अछि । हमर जीरणमे साहित्यक कोला जगह अछि तँ ओहि लेन हम आभावी छी माझदर्शनक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीकेँ, गकरँव श्री आशीय जीकेँ, रिदेह ग्रुपक मित्रमंडलीक आ समस्त पाठक लोकनिक जिणक माझदर्शन आ प्रेवणाक रँस अर्जित पुजीकेँ हम एहिठाम पवमल छी ।

अपल मिलनक आशिये

जगदानन्द ना मल

ग्राम पोस्ट- हरिपुर डीहठेन, मधुबनी

ग्र-मेन j agdanandj ha@gmail .com



एया

१ अँ ३७ गजन, सबन रार्णिक रँहव

३१ अँ ४९ गजन, समाण र्णरृत

४२ अँ ४४ गजन, रँहले ढूतकाविर

४३ गजन, रँहले ढूतदाविक

४७ अँ ७९ गजन, रँहले वगन

७२-७३ गजन, रँहले वजज



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३४-३७ गजल, रँहले हज्ज

३१ गजल, रँहले अन्नवक

३५-३६ गजल, रँहले अशोकिल

७० मँ ७२ गजल, रँहले अमग

७३ मँ ७३ गजल, रँहले खशीक

७७-७१ गजल, रँहले मनीम

७५-७६ गजल, रँहले जदीद

१०-१२ गजल, रँहले कनीरँ

१३ गजल, रँहले करीव

१४ गजल, रँहले हमीद

१३ गजल, रँहले मवीअ

१७ गजल, रँहले अजम्मम रा अजाम

११ मँ ५१ रँम गजल

५५ मँ ६४ अत्रि गजल

६३-६७ हजल

६१ रँहले कनीरँ

६५ माला अम- २५२२-२५२२-२५२२-२५२

६६ रँहले अतकविरँ

१०० अ १०५ मवम रारिक रँहव



1

समिलेह संग्रह अहाँक हाथमे पसबन जे  
अहाँक जेन पवसनहूँ मोनमे निखबन जे

मिलेह हमर सभेठा मिथिलाक माँष्टि पागिसँ  
करेजसँ निकलि क२ कागजपव उतबन जे

बहि त्रान रूँछि साहित्यक शिक्षा किछु पएनहूँ  
अ सभ आशीय थुकरबकेँ अछि चतबन जे

हमर अप्पत्तानसँ पबिचय अहाँ कवाएँ  
धिया पाठक अगल पढ़ि गनती पकड़न जे

समेष्टत मय्य' एक एक अणमोन मिलेहकेँ  
हमर प्रति करेजसँ अगलक सहबन जे

6



(सबन रार्षिक रँहव, रर्ष-१+)

\*\*\*\*\*

2

भाग आरँ हमरूँ लिखरँ अगल युष्ठन कपावगव  
जेना ग्रा भात-दाजि तीमल ओकव उँगव अचावगव

सोष सनक घव-अँगल सुखा सल हमव पविराव  
डोडि एनहूँ देशे अगल दु-टावि ठकाक रँगावगव

कनिको अठा नहि एगो जाँता नहि कवड कवाली नहि  
बुन-मिवाटाग आनि जेनहूँ सभठा पौट-उँधावगव

टिहनक ले केओ ले जाणनक ठुँअव रँमि बहनहूँ  
गेनहूँ ग्रा अगल माँष्टि-गामि डोडि दोसवक द्वावगव

हम कमेजौँ घव ओ भवनक हमव थोपडि ती खानिए  
आरँ रँसन मन्न कलैए रँवखामे चूरैत टावगव

(सबन रार्षिक रँहव, रर्ष-२१)

\*\*\*\*\*

7



3

बर्दा या त्रुकेए हमार घवाड ीपव

हकुव सुतेए हमार दुखावीपव

गामक पणिगव भात जोडा क२ एलौ

डी पेशे पौमल गामक उधावीपव

जे किड कमेलौ हाथ-पएव तोडा क२

माँमे वाति खर्च भेन डुडु ताड ीपव

रँचेलौ रँथ भवि पेशे काँ-काँ क२

गमेलौ गाम जे आरँक सरावीपव

जोक आषक आशा अप्पल रँसाँडु यौ

घुवि आँडु हल्ल' सौमसल रँड ीपव

(सबन बारिँक रँहव, रँ-१४)

4

किडु-किडुमे जिणगी रिताँने लेन मजूरुव डी

माँष्टे पामि जोडा अप्पल किएक एतेक दुव डी

8





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आरौ ज़ाए ज़ाउ घुरि-घुरि अप्पन-अप्पन घब  
घबमे बेष्टी ले बखल माड-भात भवपुव डी

तिमल-तबकारी रौट-रौट कर ले गुजारा यौ  
घुरि आउ अप्पन गाम एतका अहाँ हजुव डी

पवदेशेमे कतेक दिन बहरै रनि पड़रौ  
अप्पन घब आउ एतएकेँ अहाँ तँ गकर डी

अपन लोकक मल-मलमे मल अहाँ रिसुयौ  
पबक द्वाविपब रँगन किएक मजदुव डी

(सबन वार्षिक रँहव, रनि-१+)

\*\*\*\*\*

5

सोना भसन ज़ागए जूनि कष्टीकेँ पकर  
छोड़ि अपन भाया नहि खबष्टीकेँ पकर

दोसब घब धेल भैठत नहि ओ मिलह  
छोवि आनक रौन अपन अष्टीकेँ पकर

आदी कानसँ अपन शिक्षा लेल रिश्वे अडि



नरीनताके धावमे नहि काँठीके पकक

सपल हमर संसृति मधुव भाया अडि

मात मावि ठेलाके अपन खाँठीके पकक

जोवि दिगी अरुंग घुवि आँडु अप्पल घब

आरि दवउंगा मधुरणी बाँठीके पकक

(सबल राफिक रहव, रफि-१७)

\*\*\*\*\*

6

बाँरा सोखबिके रोहक की कली

रहूत कछोठैए गामक दली

अशोक टाढ़ाँ सँ कुदि सोखबिमे

जागठ डरि कोना पानिमे रली

रिसी रिसारी कोना बुका कए

पुनी रिसारै जेन काँठी खबली

डीन क२ नानी हाथक मछकुवी

जेठ-जेठ हाथसँ डाली मली

जखन अरौत गामक गथाद



कनि-कनि क२ ह्य लोलेमे रँही

सभ सुख बलितो पवदेशीमे

माष्टिक रिञ्जोह कते ह्य सही

मैबतो मन्त्र सभ सुख ज़ोबि क२

मिथिनाक माष्टपव ह्य बही

(सबन रार्णिक रँहव, रर्ण-१२)

.....

7

बहि ह्य कागजक आखर जनि पएनहुँ

बहि केकरो कलेजमे ह्य सनि पएनहुँ

आरँ के पतियाएत ह्यर मोषकेँ कनिको

ह्य तँ बहि केकरो अणर रँनि पएनहुँ

रिण पानिक गति जेना माडक हेधत ड़ैक

ओहे गति ह्यर ह्य बहि कनि पएनहुँ

अण्णर घब ज़ोर्डा क२ पवदेशी ज़ा रँसनहुँ

सुम्वर यदि ज़ोर्डा बहि किड अनि पएनहुँ



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैवथ-रैवथ हम बहनहूँ पबदेमेमे

उकवा तँ मय्य' अपन बहि मनि पएनहूँ

(सबन रार्पिक रैव, रर्प-११)

\*\*\*\*\*

8

जाति पातिपव आरै हम बहि नडरै यौ

हम मेथिनपुत्र मिन क२ आगु रैदरै यौ

अपन माष्टि पातिपव आरै ज्ञीयरै हम

प्राप अप्पन जेवरै रचन ले तोवरै यौ

रौहव रैहूत डैक दुध मनाग वाखन

मड् आ रोष्ठी नून जेन सड्ठी जेवरै यौ

खून पसीमामँ अप्पन धवती पठाएरै

मेहनतमँ मोणा उंगजा कए बहरै यौ

रिसवन माण सन्नाण फेबमँ जगाएरै

दूनिआक बक्यामे मय्य' फेबमँ उठरै यौ

(सबन रार्पिक रैव, रर्प-१७)

\*\*\*\*\*





गवीर रनि गेन आग जवहके रकवी

टिकरी धमिकाहा गामे गाम हवन अडि

डाका गरी गबाममे जू स्वतलो नितेनस

अ निश्चय रूमु आमो हमार मवन अडि

ठोगी भङ्के नहि निकले कपेया दाममे

भवि थारी जेल खड माडक तवन अडि

मेहव नहि मयु गाम गामके टोकपव

मयुवथस सजि मेवारखाणा तवन अडि

(सवन रार्धिक ररव, ररि-१७)

\*\*\*\*\*

11

मिथिला बाज अडियामे सर्गित मेहीद सभके श्रेया सुमन -

खुमस भिजले धवती मिथिला ररररे कवते

आरि जोज नगरि कियो सडा गवरे कवते

सुनु रनिदानी सुनु मेगानी आरि दिन दुव ले

रिप्रेक नकशामे मिथिला बाज चमकरे कवते



कतरौ चनटे रूम निकले चाहे हमब दम

फाति रैदने आगु आरि जूमि अ ककरे कबते

रैहूत सहनहू सभ सहरे ले आरि ककरो

सोमिंतक हिनकोबस दूमण मबरे कबते

एक खुषक रूदस सए रैनिदानी जग्य जेते

अण अघिकाव जेरे जेन ओ मडरे कबते

(सबन रार्गिक रैहव, रर्ग-१+)

.....

12

हम टान जेरैनेए रैदने आरि लोकर तेयो तारा जेरे

मेथिनके रैदने डेग नहि ककत आरि जयकावा जेरे

मिथिनावज मँले छी हम तीथमे नहि अघिकाव रूमि

टप्पाबस दूमका नहि देरि किशेगज तँ आवा जेरे

जोबने दिनी मँरैग अमृतसव सुवतके रिसले छी

अण धवतीगव आरि नहि केकरो सहावा जेरे



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

शौर्ये ह्य जगद्वै ह्यवस्यं प्राचीन मिथिलाक शौनके  
रिपु मत्पव एकरोव ह्यव पुर्ण मिथिलाक बाबा जेरो

उठु "मय्य" जयकाव कक अणव तीतव मिथिलाद कक  
ह्यवस्यं निश्चय कए सह सह अरताव रियहावा जेरो

(सबन रार्णिक रूहव, रर्ण-२२)

.....

13

केहन-केहन दुनियाँ केहन-केहन वंग एकव  
कियो हँसै कियो कलै कियो नुमैए संग एकव

कियो मलैए दुधक द्वाले कियो भाँगमे डुरैन अडि  
बूमि नहि पएनहुँ आगतक कमिको ठग एकव

पबैत टिगड़ १ नम्ब्री देखजौ करैड चवारैमि पाड़ १  
गंगा-सङ्गना पाणि भलेत की हमरुँ डी अंग एकव

भेष्ट मांगे पौहना पौहना क२ गदहोकेँ रौप रैना क२  
जिठैत देखु गिवगीठ जकाँ रैदलेत वंग एकव

मय्य' डन कारिनाम टिहाव रैलानहि अणटिहाव







मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बीक बीक लोकक अ कहल काज अछि  
रौंठी रौंठीत ली कनिका किअ नाज अछि

मायाक महिमा सगरो पसबन अछि  
जतए देखु आरि कसैयाक बाज अछि

धर्म निकलैत अछि पाखण्डमे रौंढि क२  
बरका आंग कहल एकव शौज अछि

रैमानी शैतानी रिच्छाय पोसांग डैक  
शुद्धाक ज़ीरनमे तँ खसन गाज अछि

अपन रँड १गमे मय्य' रँड १ग कहि डी  
माथक रँगन कहल नर ताज अछि

(सबन रारििक रँहव, ररि - 15)

16

आंग कालि तँ बाजनीतिक राजाव रँहूत गर्म अछि  
देखु लता सडक हान रँगन कतेक रँशर्मि अछि



टासन ईका नगा कए रँजन रँडका-रँडका भउ  
बहि थुछु एहि संभावमे केल कतेक फकर्म अछि  
अछि जे कर्मयोछा धीव रीव ओ कतए रँजेत अछि  
दृष्ठा भउ कबैत सदिखन अगन-अगन कर्म अछि  
तेय्याबी आ सञ्चारणा अ तँ सँसँ रँडका प्रेम अछि  
जे नडाँए एक दोसबसँ ओ बहि कोला धर्म अछि  
हम छी मैथिल आन ले मन्त्र कोला हमर धर्म अछि  
सपलामे जँ तियागी अ सभसँ रँडका अर्धम अछि

(सबन रार्धिक रँहव, रर्षि-२०)

.....

17

घब-घब वारणा आग रँसन अछि  
सौभाग्यक सीता कतए भसन अछि

करेजाक मिलहक मोन बहन ले  
सभक पिन्नाव पागमे हसन अछि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कर्तरा लोध रिसवा गोन सततवि

श्रुताचावमे सत क्रियो धमन अडि

रैमान रैमन अडि बाजगदीपव

गमानक मीठव कते धमन अडि

देशे समाज मय' नहि कमेन अरि

जमाए रैनन आठकी धमन अडि

(सबन रार्णिक रैहव, रर्ण-१४)

18

हाथीक दाँत देखायैकेँ आव बुकायैकेँ छै आव

लताकेँ कहिक गप्पा छै आव रैनारैकेँ छै आव

केनक भोज ले दानि रहु स्रुके अ बुमान

भोज कबेक रात आवो छैक देखायैकेँ छै आव

दोसबकेँ फणनमे ठाँग सत क्रियो अडि रै छै

फणन अगन सार्जनिक कवारैकेँ छै आव

मान्बकेँ मजा रहुते लोग छै सतकेँ बुमान

कनियाँ सन्न मान्बमे मजा सुनारैकेँ छै आव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भाग धनक गौबरै तँ गौबरै आहव बहे छै  
मोष्ट कपेला जखन राग जे पठाँरैकेँ छै आव

(सबन रार्पिक रँहव, रर्पि-१५)

.....

19

हम रँनि गेनहुँ आहव कथा बाज करैत अछि  
अत्राणी रँनि बहनहुँ भाग हमर जड़त अछि

के चनरैए गौनी कएकव सीना छनणी होए  
कतहुँ देखु हाथ हमरे सततवि नडत अछि

रिग्न अन्नकेँ सततवि जनता बुखे सुतेत अछि  
गोदाममे भवन अन्न एखला खुरँ सडत अछि

सतक घबमे ग्रा हड हड खँ खँ हते छैक  
रैठी माँस कहियो ले पुतेह किए मरेत अछि

मुठ करै मुठ सुनरँ सबसँ सत भागि गेलै  
सह कहक मोन मन्न गदहा रँनि भवेत अछि

(सबन रार्पिक रँहव, रर्पि-१६)





(सबन रार्पिक रँहव, रर्प-१४)

.....

21

काण ले अगन देखरै कोआ थिहावरै

कछ कछ कोणा अहाँ मिथिना सुधावरै

घोघ तब कमियाँ कोठी तबहक माड

मोष होगतो कछ कियो कोणा मिघावरै

नागन आगि ज़ीरनक मिमाएरै कोणा

की ज़िणगी भवि खडने खडने गजावरै

कहियो तँ रँसरै आ ककरो रँसाएरै

भँकैत सीथ कतेक आरौ उजावरै

गामि केखलो मखुः पियामजोरै पीएरै

की रँनि रँकनेन माष्टिपव षँघावरै

(सबन रार्पिक रँहव, रर्प-१३.)

.....

22

23



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मनुषखक एहि दुनियाँमे कोला मोन नहि बहन  
हमवा जेन केकरो नग दुष्टी लौन नहि बहन

बैजाएँ कतए ककवा सभठी साज धुँष्टिगेन  
हुन एकठी सुँष्टन ओहो आँरि ठोन नहि बहन

सभतरि घुँमेत अछि मनुषखक भेषमे हुँडु ब  
घुँकारै जेन ओकवा नग कोला खोन नहि बहन

बातिक भोजन ओनिआषमे माएक मोन अधीब  
हुन हमर रौँडि मे एकठी मे ओन नहि बहन

हँसत आ क्रुयागत बहए जतएकेँ सभलोक  
मिथिनाक गाममे मनुष आँरि ओ ठेन नहि बहन

(सबन रार्पिक रँहव, र्पि - १९)

\*\*\*\*\*

23

सभकियो दुनियाँमे किएक आँधि ओवारै डैक  
माँगि नहि निए कियो तेँ सभकिहुँ घुँकारै डैक

गवरीरी भेलैक रँहुते केहन अ राँरँहा डैक  
गवरीरी नहि सबकार गवरीरैकेँ मेँठारै डैक

24





माँस भेनी सबदाव गनती बहि हूणकव

जतए ततए किएक प्तोहूकेँ जड़ रीं डेक

जतेक दर्द रैथामे रैथीयामे ओतरेँ सभकेँ

रैथी रिकाग किएक रैथीकेँ सभ छ्थारै डेक

दुनियाँक बीत एहन मल्लकेँ ले मोहाग डेक

खोपड़ ीमे बहए जे सभक घब रँभारै डेक

(सबन रार्णिक रँहव, रर्ण-१+)

.....

24

अबकोसँ सयँफ जेड़ रीं डे पाग

जेठकारेँ रँडका रँभारै डे पाग

हुमियो रिकाग डे मोलेमे आग तँ

सतकेँ सभतवि म्भकारै डे पाग

ज्मक कमिको मोन बहि बहन

धरचन सभ्ठा म्भारै डे पाग

25



बहि माए बाँबू बहि भाग बलि  
दुनियाँमे सबकेँ कसारेँ छै पाग

टिहाव ले अणटिहाव एहिठाम  
मय' आग सबकेँ हँसारेँ छै पाग

(सबन बार्षिक रहव, रर्षि-१३)

\*\*\*\*\*

25

मावी माछ बहि डुंगडी खता  
भवि समाज घोड़नकेँ छता

पबच्छ रँजन जगत डी  
खाग डी गवदनिपव कता

कालोड रिएन कौकडू खए  
भय गेन देशेक नता नता

सगतो नाँयन जागत अछि  
डन डन मवीयादाकेँ हता



बहरै भरोसे कतेक मय्य'

भेष्टै एक दिन हमरो भत्ता

(सबन राप्तिक रैहव, रर्षि-११)

.....

26

सुबशीक झूठ रैएल महगाग माबनक

रैवथ-रैवथगव पारि रैधाग माबनक

डनहुँ भले रैड नीक रिण रैहले कतेक

गोव-भाव कमियाँ संगक सगाग माबनक

मुठक वंगमे डुरि ज़रितहुँ कतेक दिन

वंग हष्टैत देवी मुठक रैड ाग माबनक

सुधि रिसवि कए सभ्ठा निमामे रैहनेहुँ

दिन वाति पीया कए गाम गमाग माबनक

भौतिक सुखमे डुरेन मय्य' सगरो दुनियाँ

जतए ततए हवज्जीकेँ उँयाग माबनक

(सबन राप्तिक रैहव, रर्षि-११)







एक ले एक दिन मबर हमाँ

फकूव रिनांग जकाँ पेट पोसिठ

आरि जूनि ओले रबर हमाँ

आगु रैदा नर समाज रैनाएर

ले पाडु आरि आगु चनर हमाँ

थाख डनि मन्न रैत रौएनहुँ

आरि अगल घब रैसर हमाँ

(सबन रार्पिक रैहव, रर्प -१३)

.....

30

गजन बहि लिखतौँ तँ हम कबितौँ की

गजन रिगु जिगगी अगल जरीरितौँ की

शेवारैमे निमा डैक रूमनहुँ हमाँ

शेवारै बहि पीरितौँ तँ हम पीरितौँ की

सभ कहनक बहि दिमाग हमबामे

एहिँ रैसी नए कए हम परिँतौँ की

30



दुनियाँमे सभतवि भ२ जाग मोल मोला

तँ कइ मोलाकेँ कियो कमिना पुढितौ की

मम माबल मम रौसन छी बहि बूमू

एते हम्मामे रजितौ तँ अहाँ सुनितौ की

(सबल रार्गिक बहव, रर्ग - १३.)

\*\*\*\*\*

31

हम ठोनक छी सदिखन रजिते बहनहूँ

बहि सुनक कियो रात पीरिते बहनहूँ

हमर मोनक गप्प मोलामे बहिगोन रँद

कहर कोणा ज़ीरण भवि मोटिते बहनहूँ

जकब छन आस ओ सभ छोबि छनि देनक

अनछिहावसँ समिलह भेष्टते बहनहूँ

टीरो क२ कलेजा देखाएँ तँ पतियाएतकेँ

अगन छुँएन कलेजकेँ जोडाँ ते बहनहूँ



बूमाएरै कोना मोनकेँ शिवारौ भेन महग

आँधि निहावि मय्य' आरै तँ तकिते बहनहूँ

(सबन राँिक रँहव, रँ-११)

.....

32

उ निमाँ शिवारैमे कतए चाली जे पीरैक जेन

रँहाँा माहूवमे कतए चाली जे टीरैक जेन

सगरो रँहन अडि धाड़ आरै शिवारैक देखु

मारु कतयसँ सूँ-ताग अ धाड़ सीरैक जेन

रँचन किअ आरै शिवारै ठूँन कलेज जेन

रँहूतो ठे ज़ीरणमे एकव रँदो ज़ीरैक जेन

जँ डगमगएन डेग शिवारै किअक थामरौ

राँकी अडि एकव रँदो रँहूत सीरैक जेन

रँहाँा रँहूत अडि दूँनियामे अथला ज़ीरैकेँ

आरु मय्य' देखु रँहूत किड अडि पीरैक जेन

(सबन राँिक रँहव, रँ- १५)







जौ दीगमे राती बहि तँ कहू दीग जड़ एरै कतएसँ

आरै दियो जगमे रैठीके के कहे ओ प्रतिभा गहदा लोग

झुं-हल कवरै तँ कपणा स्वगीता पाएरै कतएसँ

माह-मह, रामेनके मगता रैठी जोरि के दोसब देत

रिष रैठी रबके कनियाँ घबमे मज्जाएरै कतएसँ

धवती रिष उगजा कतए घब रिष कतए घबाड़ि

रिष रैठी मगलामे मर मसाव रसाएरै कतएसँ

हमव कनियाँ माए राती ओहो तँ किनको रैठीए छुधि

रिष रैठी एहि दुनियाँमे मय्य' कहु आएरै कतएसँ

(सबन राफिक रैहव, रर्ष-२५ )

.....

35

डुपि-डुपि क२ मदिखन कले डी हम

घुष्ट-घुष्ट क२ दिन बाति मले डी हम

नगन एहन हे डै डन ले रूमन

रिबहके आगिमे आरै जले डी हम



गन भविकेँ दूरी महजो ले जागए

डन-डन जाएक दिन गले डी हम

सत तँ रँताह कहेत अछि हमरा

हूक धाणमे बमल बहे डी हम

जाहि रँठपव चलि प्रियतम गेला

मय' ओ रँठकेँ निहावि तके डी हम

(सबल रार्णिक रँहव, रर्ण-१४)

36

दर्द कलेजक देखाएँ तऽ अहाँ माणरँ की

हमव रँत कणी सगलामे अहाँ माणरँ की

अहाँ कहजौं प्रकयक प्रेम गोरँव आ कऽ

कलेज टियो कऽ देखाएँ तँ अहाँ काणरँ की

दोख एकेठामे होग टिक सतमे कतौ बलि

सतकेँ संग हमरो अहाँ ओहमे माणरँ की

अहाँ कहेत डी सतठाम अन्हारे-अन्हारे डे

गजोबिसासँ आँखि झुनि अन्हरिया डानरँ की



एक लेव हमरोपव भरोसा कय कs देखु  
प्रेम केकवा कहैत डैक मय्यँ ज्ञानरँ की

(सबन रार्णिक रँहव, रर्ण-११)

.....

37

बहि हमरा मागक तोड़ल चाली  
बहि हमरा पातक जोड़ल चाली

बर मिथिना निर्माणक रँन जेल  
शुभ मिथिना बाजक जोड़ल चाली

सुगक भाँठी सन डोनति लोकक  
मोषक रँदरति ले मोवण चाली

रिष्व ज्ञानक भय केल जौवे बहि  
घब घब रिचरिश्यी जोड़ल चाली

हक हमरा एखन अप्पण चाली  
मन्तणी तीमल बहि ह्योड़ल चाली



(रर्षी-१३, गात्रा- नख नखठा दीर्घ सभ पाँतिमे)

.....

38

ठैषा ओहे जे ठैले सभकेँ

तारी ओहे जे तारे सभकेँ

जेखक ओहे जे माले मलकेँ

बचना सभ हुणकव डुरे सभकेँ

कमियाँ ओहे जे भारे रवकेँ

मान्भवमे अगना रूमे सभकेँ

सता ओहे जे माले रिधि ले

जुता ढुका जे खाले सभकेँ

घबकेँ लेठा ले बाखे ममदु

आश्रिम आगु ओ जीते सभकेँ

(गात्रा क्रम - नख नखठा दीर्घ सभ पाँतिमे)

.....





जूनी सगे सग बहिनो हे सखी

बहिऐ हुषकब मोन ज़ीतन ज़ागए

सोरणमे प्रवरौ रँसातक ज़ोड़ छै

मारबिया रिषु लै त' ज़ीरन ज़ागए

दुरँन निणमे सगब दुनिया छै ज़खन

रीया प्रेमक एत ज़ीरन ज़ागए

भोले उँठिते प्रेम लौबन मय्य' ड़लौ

बाजे मबि दूँह अरि तीतन ज़ागए

(मात्राक्रम २२२-२२२२-२२२२)

.....

41

हम हँसलौ तँ सँसाव ३ हँसन

कासनगब हमब लै कियो कनन

सिदहामे रँसन आग लोक सभ

आषक लै सरोकार छै रँचन

घुषु खेले सगब घबक खामकेँ



खव रौती निकलि डोलिते चमन

खुलसँ ओवगानी सभक पछन

सुनते आरि के केकरो कहन

मस्य' मसलोक गूढ़ टोव खा कए

कियदाणी सभक देखते बहन

(मात्रा एम २२२९-२२९-२९२)

.....

42

जै नावाजु छी गानि जाहुँ

पिया प्रेम रिमि जानि जाहुँ

महिस भेल गारी तरे अछि

घबक खीवसा छानि जाहुँ

मवन माछु पौवन दही अछि

हिया हमर सभ गानि जाहुँ

कबीगा रैडद ऋगन पवसु

किछो ले कनी कानि जाहुँ





छिठैल बागणी मरुवत ले

घबो घुबि अहाँ ठानि जाहुं

(बैहले अतकारिबै, मात्रा एम-१२२-१२२-१२२)

.....

43

हकन लाव माए कले छै

तकव पत्र अथिया रैले छै

कते अरि रैमाण रैदले

गवीरक ठकारे गले छै

पतित रैनन लता तँ देमिक

दुनु हाथ ओ मन सले छै

पएनक क्रियो जतय मीका

अपन रैनि क२ ओहे छैले छै

रैनन लोकना जेठलेअति

अदा मय तँ सभठा जले छै



(रैहले ऋतकारिरे, मात्रा एम-१२२-१२२-१२२)

.....

44

बहरे आरे ले दाम रेनि हम

अपन नीक गतिहाम जनि हम

जखन ठाननहूँ हम अपनपर

सद्गदा नएनहूँ तँ सनि हम

उँठा साथ जतएसँ तकनहूँ

दएनहूँ तँ बसब्र गनि हम

दूनीयाँक माहूँ पीले

चले छी अपन मोष तनि हम

जमान खून मावनक धधवा

नएनहूँ रिजय रिश्रे ठनि हम

(रैहले ऋतकारिरे, मात्रा एम-१२२-१२२-१२२)

.....

45

42



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अ हँसी हमर स्रनलौ अहाँ  
दर्दके ले तँ स्रनलौ अहाँ

दाँतके रीटमे ज़ीत मग  
मोषमे अगन झनलौ अहाँ

ले हमर मोषके टिहलौ  
झूठ किए देख घुमलौ अहाँ

थेगके हमर हँसि रिसबलौ  
मोषके तौरि म्गलौ अहाँ

हाथ मंगे खूशीके गकरि  
छन्दन म्ग' केव खूनलौ अहाँ

(रँहरे झूतदाबिक, २१२-२१२-२१२)

.....

46

धाख मभठौ रिसबि गेलौ  
घोष हूकव उँतबि गेलौ

सुठ कोषाके श्रकायत

43



जखन सौंसा रँजबि गेलौ

सय रँटासरेँ रँटत कौणा

काज सगँठा ससबि गेलौ

ओ डलौ हेलसगसँ डुरँत

काज सगँठा ससबि गेलौ

भेल लता बीसमे सभ

देशे सगरो बगबि गेलौ

(रँहरे बगल, मात्रा एम-२१२२-२१२२)

.....

47

सुख भवन संसार चाली

दुखक ले अँराव चाली

सोण सदिखन खुरँ हवथे

रँसक ले ठँकाव चाली

भवन घब सिखनाक ज्ञानसँ

अँसकेँ तँडाव चाली



जोति अरुव हुन रबथे

भङ्गके सकार चाली

सभ कियो मय हंसि क२ भेठे

एहल सकार चाली

(रहने बगल, मात्रा एम-२१२२-२१२२)

\*\*\*\*\*

48

बग देखु भवन अछि सभतरि तँ खुस

देशे गेलै लौन रौमारीक घुस

साग तबकारी कते भेलै महग छै

आरु छी पौसित लषा भात घुस

षामके नत्रा गरीरक देहगव अछि

नदन करिनाहा कते छै गवम हुस

छैक भिसकी बग रँहै भवपुव सभतरि

एखलौ हग गजब केजौ पाष हुस



माबि गवनी देखू मय्य' रैरैस कलै डी

ओ तँ अछि प्पेबीसमे प्पोसाति जूषसँ

(रैहले बगल, मात्रा एम-२१२२-२१२२-२१२२)

.....

49

तेम रिष्व जेना निशेठ ठैसी धएल

रिष्व पिया जीरण रितत कोणा अएल

रैबख रैबखसँ हम तमावी गुजले डी

रूमरै की सुख सँम पारैनि रिष्व कएल

छै पिया सुख की रूमरै कोणा पिया रिष्व

जुप हवावा रूमरै की रिष्व पएल

मोम जीरणमे हमर रौरूक की अछि

मोम रूमरैक डल्लमे हुनका गएल

बंग रैदनति देखैलौ सभकेँ हँसीमे

देखि मय्य' दुनियाँक बहलौ झूठ रैएल

(रैहले बगल, मात्रा एम २१२२-२१२२-२१२२)



50

जीरण कथन तक डैक ले रूमनक कियो  
कथला कलेजक गप्प ले जननक कियो

भेष्टन तँ जीरणमे सुखक संगी रहूत  
देथेत दुखमे आँधि ले तकनक कियो

दुखकेँ अगण रैसी रूने किछ लोक सब  
भेलै जँ दोसबकेँ तँ ले सुननक कियो

सदिखन बहन भालीत सब काजे अगण  
ले लाव आनक घुबि कए रिडनक कियो

जीरण तँ अछि जीरैत मय्य' सब एतए  
मगवो क२ जे जीरैत ले रूमनक कियो

(रैहले बज्ज, मात्रा एम-२२५२ तीण-तीण रैव सब पाँतिमे)

51

47



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जखन खगता सभसँ रौसी तखन ओ झूठ मोड़ि जेननि

जानि आहत छोरि हमवा सुखसँ नाता जोड़ि जेननि

देखि टकमक बग सभतरि ओहिमे रहि ओ तँ गेली

जानि खखड़ि ओ हमर हँसिते कलेजा कोड़ि जेननि

बैन्द केले हम मलौबथ अप्पण सदिखन टुंग बहलौ

पाख रँवथे आरि देखे खेब सपना तोड़ि जेननि

दुखसँ अप्पण अधिक दोसबकेँ सुखक चिन्ता कएल

आँखि जे फुटै दुनु तँ एक अप्पण छोड़ि जेननि

टनक सप्पत संग जेलौ ज़ीरनक जतवाक पथपव

मेघ दुखकेँ देखते ओ संग मल्लकेँ छोड़ि जेननि

(रँहले बगन, मात्राक्या - २५२२ चाबि-चाबि रँव सभ पातिमे)

52

योड़ि । जखन कोला भऽ नाँगड़ जाग छै

कहि ओकवा मानिक सभसँ दै राँग छै

माए रँजन हंसवी तँ राँनु रौम छथि

नर लोक सभकेँ जेन सभ्ठा पाग छै





घब मेरैले रौसल गबदरौ ठै क्रिअ

टिहैत सभ कनियौक नामसँ आग ठै

कानूनकेँ बखल रूनु ताकपर जे

राज्जार भविमे ओ कहागत भाग ठै

थाए कए मोसी हज्जारो मुषवी

रैनि रौसलौ कोना कए रैडकी दाग ठै

पोसाकमे लताक जिणगी भवि बहन

ज्जीतेत मातव दैमेकेँ मय्य' थाग ठै

(रैहले बज्ज, मात्रा एम - २२५२ तीस-तीस रौव सभ पाँतिमे)

.....

53

रेदरदिया ले दरदिया जाले हमर

ठाकासँ जूनी थैमेकेँ गाले हमर

सदिखन जरेए मम रिबहकेँ आगिमे

तेयो पिया ले किछु दरद गाले हमर



माँउण रिउतन घुबियो कऽ ले एना पिया

बहि खीट हूनका प्रेम नग आले हमब

रँवखा खुरे रँविसय तँ गवजय रँदवरी

डुतिया दगध भेलै हिया कालै हमब

रँसना पिया मय्य दुव रँड गवदेशेमे

मवकन हिया कमिको तँ ले मालै हमब

(रँहने बज्ज, मात्रा एम - २२५२ तीस-तीस रँव सभ पाँतिसे)

54

हमब मिथिनाक माँसँ मोण उंगजेए

क२नसँ रँमि पानि अमृत धाव निकलेए

मगव पौखरिक डह डह पानिमे गामक

कपेया रँमि मखाल माँड गमलेए

घने घब सभ डठेए रँड्ड रँमियाबी

दनासँ बाजनीतिक जेड जनमेए

हराकेँ हाथ रँन डे ओ रँदत आँगा

जँ जेले ठानि डनमे चाण पकरेए





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(रौहले हज्ज, गात्रा एम १२२२ तीन तीन रौव सत पातिमे)

.....

56

करेजामे अगल हम की रौमेले डी  
अहाँकेँ नामठा लिख-लिख ब्रुलेल डी

रिठेए वाति ले कनिको कठेए दिन  
अहाँकेँ रौठेमे पगनी सजेले डी

हमर ठोवक हँसीकेँ देख ले हँसियौ  
अहाँ हँसि लिख दरद तेँ हम दरलेल डी

हमर ज़ीरन अहाँ रिषु ले डूले ज़ीरन  
मसुबखसँ देरता हमरा रौलेल डी

निमा अ पज्जामे आँथिक अहीकेँ मसु  
रूमू ले हम महग ताड़ि चढ़लेल डी

(रौहले हज्ज, गात्रा एम १२२२-१२२२-१२२२)

.....



57

मम लोअए रुम मवि ज्ञाग

रंस पाँट काठी पवि ज्ञाग

जे सुठमे सदिखन भवन

एहन तँ दुसिखा गइति ज्ञाग

ले घुस रिना जतए काज

ओ सगव शोसन जवि ज्ञाग

एक्का सइतन पोथविमे जँ

सभ माड ओकव सइति ज्ञाग

फन जाहिमे एक्का भउ

ओ सगव फन मस्य' तवि ज्ञाग

(रँहले ऋषभवक, मात्रा एम-२२१२-२२२१)

\*\*\*\*\*

58

देख झँह मुँगराँ रँहते रँठीगत डै

नाम ककरो गवीरँक ले स्रहागत डै

53



अन्न जे जेठे जेए तखनकेँ माँसे

एहि जोतक तरे दिन भवि खटागत छै

मीठ भाषा रबख पाँचे कते दे छै

जीतकेँ बाद लतामल बुकागत छै

घुस खा खा क२ रँगले लोकना पावा

आन दमाड़ सिँ चमाड़ ी रँड चरौगत छै

अच्छ लता घुँसे रीएमाडरनुमे

एखना मल्ल गवीरक तक दरौगत छै

(रँहले ऋशीकिन, मात्रा एम २१२२-१२२२-१२२२)

59

खान वंगेन गीदड़ रँड्डु फरि गेलै

एहल आग सततवि ठग पवि गेलै

घुँवि क२ गसकुन जे लै गेन जिनगीमे

बाघिते तीररँष्टिया मगव तवि गेलै

देखनक भवन पुवन घव जँ कसखी भवि



आँखि फटले दूनु डालेसँ मवि गेले

सभ अपन अपनमे रँहठबन कोना अछि  
मनखकेँ मनख रौनुत मोन जवि गेले

बीडते 'मन' करेजाकेँ दबद कोना  
जहबकेँ घुँठ सगरौ पी कऽ भवि गेले

(रँहले दूशोकिन, मात्रा एम २१२२-१२२२-१२२२)

60

घोड़ कनिहाग घड़ १ केहन आरि गेले  
एकठाँ कंस घब घबमे पारि गेले

रँहन अछि बरकेँ तस्क आरि सगरौ  
रिँशे जगतक हक सभठाँ दारि गेले

अनन था थाह पेटक किड ले पवनक  
मानकेँ सगव भुँसा दूग चारि गेले

शेहव ले गाम आ घब-घब आरि देखु  
गीत पुरक हरामे सभ गारि गेले



डुग्री वर लेशेनक संगे आग दुनियाँ  
एक गजमे अबज देहक पागि गेलौ

(रैहले असग, मात्रा एम- २१२२-१२२२-२१२२)

.....

61

हम जू पीनहूँ शिवारी कहनक जगाना  
ठीस ले दूथ करेजक रूमनक जगाना

भठकनहूँ रैहूँ भेठेए लेह मोषक  
देख हूँ ले करेजक सुननक जगाना

निखन कोना कहरौ की की अछि कपावक  
हुन तँ रैहूँतो हूँदा सब छिननक जगाना

दोख ले हमर ले ककबो आव कहियौ  
देख हारैत हमरा हँसनक जगाना

दर्द जे भेठेलौ ले 'मय' कनी रूमरौ  
आष अषकव कथन दूथ जगनक जगाना





(रैहले अस्म, माता एम - २१२२-१२२२-२१२२)

.....

62

भूतलैलौं कि ए एम गित रैना निख

डोडा संगवो रैनालैलै छित नगा निख

रचन लै देरै हम लै किड मोन एकव

आड छलि संगमे हमवो अप्पना निख

जीरनक कष्ट ए कोना रिद्धरै एते

संग हमवा न मोनक संग हठा निख

जूमि रूमि आन जगमे संगलामँ कथला

रूमि क अप्पन कनी छु ठोवमँ सठा निख

कग सुखव अहाँकै ए ओहिगव रैदवा

जीरै कोना कलेजाये मय रैमा निख

(रैहले - अस्म, माता एम २१२२-१२२२-२१२२)

.....



63

दड़ड़ा ते थेसारी रँखाड़ ी रँलनक

रीट तवहथीपव दली ओ जमेनक

रिसरि लोदी दाली अगन कथु सभठा

कर्म पथपव थेतिलव टनि ह२व टनेनक

केखला नहि पढ़ा वहन मड़वाति सगवो

बाजमत्री रँनि उ२रु भवि ओ कमेनक

पहिव चग्गा दिस वाति जे खुर पढ़नक

घुस दय टगवामी किवानी कहनेनक

देख आगाँ गकुनकेँ घुवि पलेए

रँनि क२ मन्न शीगव गजन सभकेँ सुलनक

(रँहले खहलीक, मात्रा एम- २१२२-२२१२-२१२२)

.....

64

भाग भागसँ रँबीन केनक कपेया

गाम जोड़ १ सभकेँ भगेनक कपेया



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आँखि झूठ झूठि पबदेसमे जा कइ रँसनहुँ

सगव रूमितो माहुव शियेनक कपैया

आंगडि आंगडि खव रँठैलैत माए

थेतमे राँबुकेँ कलनक कपैया

गोन चम्पा झुझी नगा तोकए की

खुल छुमि छुमि सभ्ठा दरैनक कपैया

भाग राँबुकेँ मय' रिसवि जाँडि डममे

बाज लै आरि तँ घब चमेनक कपैया

(रँहले खलीक, मात्रा एम - २१२२-२२१२-२१२२)

.....

65

अछि जँ जिनगी तँ प्रेम केनाग सिख निअ

दूख रिसवि जगमे मम नगेनाग सिख निअ

कालिकेँ लै कोना बरोसा रँचन अछि

आंगपव हिन गिन आरि जेनाग सिख निअ

जीरनक अख दूख रँठि दू ठेक रूमिलो



दूरैयीयागव हैसि क२ गेनाग सिथ लिख

अगल मलमे प्रेमक जगारैत राती

आँथि सभकेँ सोनाँ उठैनाग सिथ लिख

के बुँमेनक 'मल' छै अछुतगव पापी

पाग आरौ सगे सिठैनाग सिथ लिख

(रैहले खहलक, मात्रा एम - २१२२-२२१२-२१२२)

66

कखला कियो हमरो प्रेम कवरौ कवत

गेनहुँ जँ ले घब ओ रौँ तकरौ कवत

भाँरीत अछि छैनक लोक नामसँ हमर

एकदिन सभ हमरो संग चनरौ कवत

रैसन घले घब सभ कान झुलले अगल

दोसब झूसँ हमरो जेन सुनरौ कवत

के एतए अमृत पी कए आएन

सभ एक ले दोसब दिन मवरौ कवत



जे प्रेम केनक कहियो जँ मिनियो मयसँ  
दू लोव दू गनापव ओ तँ कनरौ कबत

(बँहरे सगीम, मात्रा क्रम-२२२२-२२२२-२२२२)

.....

67

कोना अहाँकेँ घृबि कहरौ आरौ जेन  
रँड दूव गेलौ ठाका कमारौ जेन

ले बीत कमिको थीतक बुँमन पहिलेसँ  
ठूँठन कनेजा अछि किछ सुनारौ जेन

नागन कपावक ठोकव जखन देखनहुँ  
ले आँखिमे लावक बुँन घुकारौ जेन

बुँमनौ अहाँ रौसन मोनमे छी हमव  
अ दूव गेलौ हमवा कनारौ जेन

कोना कइ मयसँ कहते आरौ अप्पन दोख  
घृबि आँउ हेबसँ सँसार रँसारौ जेन



(रैहले- सनीम, मात्रा एम-२२१२-२२२१-२२२१)

.....

68

आंग सगरो गाममे हाहाकाव डै

मचन एना अ किअ अवाटाव डै

आंथि झलल रोगना रैसन भगत रैनि

खुन पीरै जेन कोना तैयाव डै

देखते के केकवा आजुक समयमे

देशके मिश्रम तँ अगल रैयाव डै

देखते झूह पागके कोना झूह मोवनक

मागि लै जेए खगन सत रैकाव डै

भवन भिबमे एखला धरि एसगव डी

केकरो मसगव मसुक लै अघिकाव डै

(रैहले जदीद, मात्रा एम - २१२२-२१२२-२२१२)

.....

69

हमव ज़ीरष भवि कनेजा धूँष्टते बहन

62



सभ कियो हमसँ दूरे हठते बहन

जेकरा हम अगल तन मन सभ सोगलौ

सोणकेँ ओ हमर सदिखन बृष्टते बहन

हमर भागक कनिक लिखनाह देखियौ

किछु जँ लिखलौ छलमे सभ मिष्टते बहन

पीठ गालु सभ कियो लेते कँठ डै

एक दोसर केव बात छुष्टते बहन

हम मिलतक कनसे मल्ल कतरौ जोजडलौ

काँट रौमन मन भरवि सभ फुष्टते बहन

(बैरले जदीद, मात्रा क्रम २१२२-२१२२-२२१२)

70

एखना कोणा कइ छी ले जललौ हम

छोवि मनकेँ आन ले धन कमेलौ हम

सभक आले जेन अहंगव हँसी चनलौ

अगलकेँ ले जामि कतए हनेलौ हम

द्वन्द्व खोखबनक हमर जे दूनु हाथसँ



ओकबो हँसि-हँसि क' अप्पण रँललौ हम

युन सगबो ज़ोरि कौँठे किअ रिडबौ

अ कलेजा ज़ानि कोषा नगेबौ हम

मन्न' कलेजा तेरि एषा अहाँ जूनि हँसु

मन्न' तय कहि गज्जत ताड़ि ि टरबौ हम

(रँहले कनीरँ, मात्रा एम-२१२२-२१२२-१२२२)

.....

71

हम गज्जत कोषा कछु भीड़मे बसगब

सगब झूँह रँलल मन्नथ तेसमे अजगब

पाग घोषाणा हरौनाक थाएकेँ

रोग छे सरँकेँ पकबल किअ कसगब

रँहिन माए भाग रौरु अगल कनियाँ

सरँ तके सँसँमे दाम नी ज़थगब

गामकेँ रँलल पलेले शिहब सरँल

थेत एकोषा बहन आरँ ले चसगब





ढै बिकाग प्रेम दु-दु ठका मोले

बीत मय'केँ ले नलो ढै कनी जमगव

(बैहले कनीरै, मात्रा एम-२१२२-२१२२-१२२२)

.....

72

आरिं चाली रैम अहाँ केव हूँकीठा

ले मवरै पील रिष प्रेम हूँकीठा

जे अहाँ रैजलो कक ओकरो पूवा

की अरुँ भेलो खनी रैम हूँकीठा

ले कठारुँ नाक आरुँ सभक सौम्य

की तले-तव बहरै मालेत हूँकीठा

डव नलोए तीड़मे ले निकष रौलव

देख थींती रैमि घले कवरै हूँकीठा

मय' देखेलो सभक अगला कनी देखु

रिसवि अप्पन काज ले रैमरै हूँकीठा



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(रैहले कनीरै, मात्रा एम २९२२-२९२२-९२२२)

73

मदल ले अलले नाने छी काहपव  
जीरण केव सरैषा आनि छी काहपव

दिस भवि जे कमेलौ ओकरे दाम अछि  
ठानीमे बूमू ले घाम छी काहपव

खुजन उंक जकाँ कोणा फवफवाग छी  
ले बखल मयवखक भाय छी काहपव

भैया भेल लता आरै ले हम डवर  
बखल हाथ सदिखल खाम छी काहपव

फकूव पौमि नर-नर साहरी केव 'मय'  
दू कष्टी रैहले दाम छी काहपव

(रैहले करीब, मात्रा एम २२२९-२२२९-२२२२)

74

66





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हक कोओलीके सुनि हिया सिहवन हमर

आँखिसँ रैते लावक ठँघबिया हो बास

माँउण रितन जाए सुनारण मल सुखन

एले पियारकेँ ले कहबिया हो बास

जबले हमर जीरण रिना प्रेमक आगि

नागन हमर सुखमे रदबिया हो बास

जीरण मल्लक रँगले रिना तेनक दीप

कोणा जबत मोलक रिजूबिया हो बास

(रैहते सबीअ, मात्रा एम - २२२२-२२२२-२२२२)

.....

76

जनमेसँ ठुंगव हम प्रेमक लेन तकसैत बहलौ

भेँठन किवण एक आशिक तकरो तँ मिसरैत बहलौ

दुख एहिकेँ केखला ले की प्रेम किड ले पएलौ

अहमोस की एहि दुनिआमे छुप जारैत बहलौ

68



चमकेत सभ रँतुकेँ हम अणजाणमे मोण रूमजौ  
मोणा जखन हम पएजौ ले रूमि क हवरेत बहजौ

किछु ले रँचन अरि अणलकेँ नुठरँअमे नागि गेलौ  
ताबी कठैयाक मेनामे होस हारेत बहजौ

आँखि रिसवि आसि गेलौ अणुवाग सभठा रिसवजौ  
गेलौ हवाएँ दुख मय' डन सुखक रिसवेत बहजौ

( रँहले ऋजम्म रा ऋजास, मात्रा एम-२२२२-२२२२/२२२२-२२२२ )

77

हेरौ कोआ खसा दे एगो आस हमरो जेन  
देरौ रानी माए जे देते दाम हमरो जेन

चन-चन गे रूचनी चले अरि खेनएँ  
भ२ गेन देनके जे माए काम हमरो जेन

बहि डमके एसा नए क२ अणष पतून  
तोवामँ सुनव देखीण बाम हमरो जेन



बैहूत केनहूँ काज नगेनहूँ बैड़ बाज  
आरौ तँ घृबि आँड रौरू गाम हमारो जेन

सभकेँ नाम गे माए कते सुन्नव-सुन्नव  
किएक बहि मन्न' सग नाम हमारो जेन

(सबन रार्पिक बैहव, रर्पि-१७)

.....

78

मान-दाँडकेँ नमना नाने नान नलौत छथि  
नानी अगन माएकेँ छोवा क२ सुकारैत छथि

हिनकव अँथिमे काजबक रिजूड ीया लोके  
मएयोसँ सुन्नव मिनमिन सनकेत छथि

नष्टकन माथगव सुन्नव नष्ट हिनकव  
देथियोहै टँदमाकेँ आरि अ नजारेत छथि

सुनि-सुनि रँहिना सभ हिनकव किनकाड ी  
कियो खेनारेत कियो हिनका नूनारेत छथि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बंग-कण टालि-टनल सभठौ निहान छति

दूकीसँ ज्ञा तँ अणल मण्णकेँ ब्रुभारौत छथि

(सबल रार्षिक रँहब, रर्षि-११)

.....

79

बिषु पाक्षिक षाँड टनाएरँ हम

बिषु टक्काक गाड़ ी रँषाएरँ हम

हमब मोणमे तँ जेँ किछु अथत

बिषु मोटले सभ सुषाएरँ हम

अणल रँषाहमे हम बलि जाएरँ

सबाध दिस रँजा रँजाएरँ हम

कनियाँकेँ नय ओकब लेहबसँ

मासुबसँ खुरँ कतिगाएरँ हम

मण्ण' मण टटन ठैषए सभकेँ

केकरो हाथ ले घुबि अथरँ हम

(सबल रार्षिक रँहब, रर्षि-१३)



.....

80

हे माए बहि चबलै नए गाए जेरौ हमा  
जेरौ आरि गसकुन कोपी गेण जेरौ हमा

अगल भाग हमा आरि अगलसँ लिखरौ  
फकुब जकाँ ले माँडै तिवणीत हेरौ हमा

बोगहा-बोगहा सब कियो कहए हमावा  
एक दिन रँनि डाकठेव बोग हनेरौ हमा

ठूठन फुठन अगल हूमक घब तोबि  
सुल्लव सतसँ पौघ महन रँलेरौ हमा

हमावा कहैत अडि मय' दुर्थ चबराहा  
पढ़ि कए सब चबराहाकेँ पढ़ेरौ हमा

(सबन बार्णिक रँहव, रँ- १३)

.....





81

माएली हमर शुकणा की भेन

दाग हमर म्णमूणा की भेन

राँराकेँ कहँनि सभ हनेलौ

सभ्ठौ हमर खेलाँना की भेन

दूध-भात आँरि हम बहि खेलाँ

पेठेदका हमर सन्ना की भेन

हम जे बूनेलौ राँरा राँरी संगे

बातिक हमर सपना की भेन

मम्ब' माया पबस्र जे अणनहि

हमर निकहा चूसना की भेन

(सबन राँरिँक रँहव, रँरि-१२)

\*\*\*\*\*

82

चम चम चम चम तावा चमकए

लौआ कए हाथक तकुआ गमकए

73



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कबीया रँकबी वर उँळव महीस

नाम रौञ्जी किए दौव-दौव रँमकए

रौञ्जाक घोवा सग-सग ठाकाकेँ देखु

काकाकेँ घोवा पिद्दी कतेक कमकए

रौञ्जाकेँ मावी माएकेँ नहंगा रँहए

रौञ्जाकेँ घघवी तँ कतेक डमकए

रौञ्जा हमव आरँ गुमगुम किएक

मल्ल' सग ठुँकक-ठुँकक ठुँककए

(सबन रारिँक, ररिँ-१४)

\*\*\*\*\*

83

रौञ्जाकेँ नहि सुननक गप्पा

उकव माथसँ रौञ्जा खसन धप्पा

रँवखा रूँनि न२ क२ एले काबी मेघ

पएव तव गानि करे डप्पा डप्पा

रौञ्जाकेँ भेन देखु कतेक चनाक





मय्य' दे सगत घब घुबि आउ काका बाँरु

लसलके कथन तक कोढ़ ठोड़ एरै

(रँहरे बज्ज, मात्रा एम-२२२९-२२२९-२२२९)

.....

85

चले चुनचुन चले गुणगुण तमासा घुमि कए आरी

जिनेरी ओत छालेत तोहब भेठेतो बाँरी

पढ़के छठन नमसठे भेल असकुक शुक छुष्टी

दसो दिस वाति मेना घुमि कए नर रतु सभ गारी

कबीया रँगबिया रुदि रुदि कए ठोनक रँजारे छे

चले चन ओकरा संगे सगब लना कनी गारी

रँगन मेनजन अछि रँकवी परति रँगन अचारे छे

रँवद सन रौक दिसतबि चुप्प बहए पहिबले जारी

बूमनको आरै तोरो होसयावी मय्य' तँ रँढ़ि या ले

नगोल ध्यान रक कतएसँ सप्तति नीकगव दारी



(रैहले हज्ज, मात्रा फ़म-१२२२ टारि-टारि रैव सभ पाँतिसे)

.....

86

तिना संक्रातिके थिटेव खाले लो हमव लोखा  
न२ जेतो ले उ कनिए कानमे उ अरिंते लोखा

टले रूँटी सखी सभ नाग रुवली किण क२ आशी  
अगन माएसँ सठपठ माँगि लल अरिं जेो टोखा

रैनासक घाँटे सेनामे कते घूमि घूमि मज्जा केनक  
किए घव अरिंते मातव रूँटि या गेन भय सौखा

कियो खुमि भेन गव तिन पारि रुवली खूँ कियो हाँके  
ननन रौरौ किए मुमेत एना पी कए सौखा

सगव कमनाक धावक रैँठमे रैँड वसंगव सेना  
सभ कियो ओतए गेलै कि भेलै मय' रुला लोखा

(रैहले वसल, मात्रा फ़म - १२२२-१२२२-१२२२-१२२२)

.....

87

77







अहाँक ध्यान किछु धरनहुँ नहि

की लोगत अछि माए पत्रक नाता

एखन तक हम रूमनहुँ नहि

हम रिसबनहुँ अहाँकेँ जगनी

अहुँ एखन तक स्नानहुँ नहि

अपन शेषामे नऽ निअ हे माता

ममाता अहाँक तँ जगनहुँ नहि

(सबन रार्णिक रँहव, रर्ण-१३ )

.....

90

निर्धन जगनि कऽ छोरि गेनहुँ माँ

कोन अपवाध हम केनहुँ माँ

केहना छी तँ हम पत्र अहीकेँ

सभ सलमे अहीसँ पैनहुँ माँ

दासक तबाजुमे ले एना जेअथु

ममाताकेँ पियामन तेनहुँ माँ





दव-दव भठकि थक डले डी  
दर्शन अणन ले दखेनहूँ माँ

मल्लकेँ अणन मिलाह ले देनहूँ  
सोनासँ दूव आरि भगेनहूँ माँ

(सबन रार्णिक रँहव, रर्ण-१२)

.....

91

हे वाम रँसु मलमे हमर  
अ थोष धरि तनमे हमर

सदिखन अहीक ध्यानमे  
ले मल रँसु धनमे हमर

थलु दवसकेँ आशिअँ अ  
भठकेँ मल रँसु हमर

एतेक मल टँन किए  
थलु बहथि कष कषमे हमर

हे वाम मल्ल'पव कक दया  
ले मल रँहि डनमे हमर



(बैहले बज्ज, मात्रा एम २२१२-२२१२)

.....

92

चलि अहाँ कतए किअ जोगहूँ झवावी  
एहि दुखियाकेँ हवत के कछु भावी

ताम ओ झवनीक खेवसँ आरि ठाक  
रिक्कन भेनहूँ एतए एमगव भावी

द्रागतीकेँ नाज रँचरै जेन एमहूँ  
निह मय मय रँहिनकेँ कोणा रिभावी

बँसि क२ खेवसँ भावथी भावत रँचरु  
सभक बक्क हे मधुसुदन चफभावी

रचम जे बक्काक देमहूँ ओ मिभारु  
कहत कोणा 'मय' अहाँकेँ हे रिभावी

(बैहले बमल, मात्रा एम - २१२२-२१२२-२१२२)

.....

93

82



माँ शीरदे रवदल दिख

हमरो हृदयमे त्राण दिख

हरि जी सतक अक्षर हय

एहन गजोतक दास दिख

सुनि दोख हय कथला अगल

दूख ले हूँ ओ कास दिख

गारी अहीके गुण सगल

सुब कल एहन त्राण दिख

बूँसि पत्र मय केँ माँ अगल

कनिको हृदयमे स्थान दिख

(रैहने बज्ज, मात्रा एम - २२२२-२२२२)

.....

94

कनी हमरो रैजा दिख माँ

अगल दर्शन करा दिख माँ



कते आशा नगोल डी

अगल चाकव रैना दिख माँ

जुगम भवि रैनि धुंगव बहलौ

मिलहक निव छैा दिख माँ

जै हम लना अहाँकेँ डी

अनथ मनमे जुगा दिख माँ

सुखेलौ लाव जवि आँथिक

चवण मल्लकेँ दखा दिख माँ

(रैहने हज्ज, मात्रा एम १२२२-१२२२)

.....

95

(हज्ज मल्ल हाथ गज्ज)

मान धोती केशे बाँगि मसवि चूगना रैगना ना

रैठौ रैठि आनि रैवयाती अ पगना रैगना ना

सभ रिसवि आँथि झुनि ध्यानसँ तोकथि कसैगा

तीतव काबी रौहव उँरुल रौंगना रैगना ना

थेत खड़ पीलन रैठ रैठ पीरैथि रैभना ताबी



आरौ नंगोष्ठी थोनि थानि अ तँ हगना रँगना ना

तमाकन टुनरौत पमाबल दिसभवि ताम

घब आँगनक टिता बहि अ खगना रँगना ना

जेन ज़ोवि रौहव आरि हाथ ज़ोवि माँगथि भेष्ट

जिठैत देवी मन्त्रकै रिसवि दोगना रँगना ना

(सबन रार्गिक रँहव, रर्ग-१+)

\*\*\*\*\*

96

गदहवाज धगु डी दिख सदरुँछि हमरो अहाँ

उंगव नदल रौम ले आँथि देखारी करवो अहाँ

मियाण मल्ल बहि मधुव ताम ठेँटु-ठेँटु करे डी

मन्त्र जलैत डी शोमलीन गायन कए सगरो अहाँ

मन्त्रबथ पुरैत सन्धान रिशेय नाम अलीक म२ क२

रिण आगति रँदरुँतु करी बहि करी सगरो अहाँ

स्रज्ञ गोरौ नागजे डाम अ कथा जगजाहिव अछि

कर पौवररी कणी हमर रियाहक जोगरो अहाँ



गृहसूक जूआ काण पव मय्य' खरै आरै कोणा  
दिख गदहण जूँ बूमरौ अपण ठगरो अहाँ

(सबल रार्गिक रँहव, रर्ग-१७)

97

डूरल रिंग बूमरै कोणा मिना की डै  
थेग रिंग केल कि ज्ञाणरै सजा की डै

रँमि क धावक कात तेनरै मिखरै कोणा  
आड देखी कुदि एकव मजा की डै

लोकवी कय ले कियो धन कमोनक रँड  
अपण मालिक रँगुँ उँ एहिँ भना की डै

आग अप्पण रँनसँ पीएग रँनते ओ  
हारी मूरुँते ठोन पीरै हरा की डै

रोडपव कोणा कलेजक पवन टूँकड़ ।  
ओहि डनमे मय्यसँ गुडरौ दया की डै

(रँहले कनीरै, मात्रा एग, २१२२-२१२२-१२२२)



98

देखलौं जखनसँ अहाँकेँ होम गेलौं रिसबि हम  
आगि खब रिसु लेमल सौंसैसँ गेलौं पजबि हम  
एकठां दुकी अहाँकेँ प्राण लेमक नय हमर  
था क मोल मोल दुँगरां छष्ट गेलौं पमबि हम  
अडि निसा टानक अहाँसँे झुगित केल बातिसे  
दूह अहाँकेँ मोबिते रिसु पाणि गेलौं पिडबि हम  
स्रस्र गेलौं रिसु अहाँ ओ स्रस्र भेलै नरक सन  
डोबि डोबि स्रस्रकेँ पाडुसँ गेलौं समबि हम  
खुजम आँखिक मस्रक सगणा प्रगुगठे भेलौं जगतमे  
देख निबगल लह रिसु रँवखक गेलौं नहबि हम  
(मात्रा क्रम- २१२२-२१२२-२१२२-२१२)

99

किए तीव नजबिसँ अहाँकेँ चलेए  
हँसी ङ्र तँ याएन हमरा कलेए



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुव रोजि खन-खन पएवक पज्जियाँ  
हमव मोन बहि बहि कए डोनरैए

छमकए हरामे अहाँकेँ खूजन जष्ट  
कतेको तँ दाँतेसँ आँधुव कष्टैए

ससवि जे जए जखन आँचव अहाँकेँ  
जिना भवि करेजाक धड़कन कलेए

अहीकेँ तँ दूह देखि ज़ीरैत मय्य' अडि  
रिना संग ले साँस मिसियो चलैए

(रैहले - दूरतकारिबै, मात्राक्या -122-122-122-122)

100

छूँन करेज बाखरै नहि एखन हम सिखल डी  
किड अगल तोडनहूँ किड भागे एहन बखल डी

जिनका नुठैरौं हम अगल मिलह भवन करेज  
हूँकसँ दूब होरौक माहूव अगलसँ टिखल डी

सोचल तँ डूनहूँ एक दिन ज़ीरणमे हेधत बंग  
ओहि बंग भवन दूगिसँ कतेक दूब एखल डी

दोसबसँ करु की शिकाति मय्य' अगल ले बूँसनक  
जिनका केरौं लह करेज तोरैत हूँका देखल डी

(सवन राँकि रैहव, रर्षि-२०)

101

बुका-बुका क२ सदिखल कले डी हम  
घूँ-घूँ क२ दिन बाति मले डी हम





मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नगन एहन हे छै डन ले रूमन  
रिवहकेँ आगिमे आरि जले डी हम

डन भविकेँ दुरी सहजो ले जागए  
डन-डन घुँटि-घुँटि कर बहे डी हम

सत तँ रैतार कहैत अछि हमरा  
हूक धागमे बमन छले डी हम

जाहि रौंठ पर छलि प्रियतम जेना  
मय'ओ रौंठकेँ निहारि तके डी हम

(सबन रार्गिक रैहव, रर्षि-१४)

गजन बहि लिखतेँ तँ हम कवितेँ की

गजन रिसु जिगगी अगन जिरितेँ की



विदेह नूतन अंक भाषापाक बचनावेखन-

अभिनेकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-अभिने- प्रोजेक्टके आगु रैठ डि, अणन सुमार आ योगदान अ-  
मेन द्वारा [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाडु ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मणक गेदी आ २.मैथिलीमे भाषा  
सम्पादन पाठकेय**

**१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मणक गेदी**

**१.१. लपावक मैथिली भाषा रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मणक उचाका आ लेखन गेदी**

(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादवरक धाकाके पूर्ण कर्णसँ सम्म नः निर्धारित)

**मैथिलीमे उचाका तथा लेखन**

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावक: पञ्चमाक्षरवास्तुआत ७, ए३, ण, न एरी म अरैत अछि । संकृत भाषाक अक्षराव  
निर्देशक अन्तमे जाहि रक्षक अक्षर बहेत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्ध (क रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ७ आएन अछि । )

पञ्च (च रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ए३ आएन अछि । )

खल (छ रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ण आएन अछि । )

सञ्चि (त रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे न आएन अछि । )

खञ्च (प रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे म आएन अछि । )

उपरोक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अरिक्कानि जगहपब अक्षरावक  
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पच, खड, सधि, खड आदि । र्याकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कहरौं छुनि जे करझ, चरझ आ ठरझसँ पुरि अगुआव लिखन जाए तथा तरझ आ परझसँ पुरि पञ्चमाक्षर लेखन जाए। जेना- अक, टटन, अडा, अस्तु तथा कषण। झदा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अस्तु आ कषणक जगहनव सेहो अत आ कषण लिखैत देखन जागत छथि।

नरीन पछति किछु सुरिधाजनक अरुष्ट छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रीतत होगत छैक। झदा कतोक रैव हस्तलेखन रा झदासँ अगुआवक छोट सन रीन्दू स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि। अगुआवक प्रयोगमे उँचाका-दोषक सम्भारणा सेहो ततरी देखन जागत अछि। एतदर्थ कसँ न२ क२ परझ धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरिँ उँचित अछि। यसँ न२ क२ त्र धरिक अक्षरक सञ्ज अगुआवक प्रयोग कवरिसे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागठ।

२.ठ आ ठ : ठक उँचाका “व ह”जकाँ होगत अछि। अतः जतः “व ह”क उँचाका हो ओतः मात्र ठ लिखन जाए। आन ठाम खाली ठ लिखन जाएरौक चाली। जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठझ, ठेवी, ठाकनि, ठाँठ आदि।

ठ = गढाग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि।

उँपर्याङ्क शिष्ट, सतकेँ देखनासँ ज्ञ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मया तथा अस्तुमे ठ अरैत अछि। गँह निगम ड आ डक सम्दर्भ सेहो नागु होगत अछि।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचाका रँ कएन जागत अछि, झदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जाएरौक चाली। जेना- उँचाका : रँण्णाथ, रँण्णा, रँर, देरँता, रँण्णु, रँणि, रँण्णा आदि। एहि सतक स्थानपव फ्रमिः रँण्णाथ, रँण्णा, रँर, देरँता, रँण्णु, रँणि, रँण्णा लिखरौक चाली। सामान्यतया र उँचाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि। जेना- ओकीन, ओजह आदि।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उँचाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, झदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली। उँचाकासँ यज, जदि, जझणा, जूग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरौना शिष्ट, सतकेँ फ्रमिः यज, यदि, यझणा, यग, यारँत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, हेखत, माए, भाए, गाए आदि।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि। जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि। एहि शिष्ट, सतक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाली। यद्यपि मैथिलीभायी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आबन्नामे “ए”केँ य कहि उँचाका कएन जागत अछि।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ए आ “ग”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पद्यतिक अक्षरवर्ण कवर उग्राङ्ग मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुषुक लेखनमे कोला सहजता आ दुकहताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शब्दकेँ केन, हेँ आदि कएमे कतहु-कतहु निखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीप प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोला रीतपर रैन दैत कान शब्दक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणभू, ओकबहु, तकौनहि, टोष्टहि, आणहु आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरँ हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणला, तकौले, टोष्टे, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अदिकशितः यक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- यडल (खडल), योडगी (थोडगी), यष्टकोण (थष्टकोण), बृषेनि (बृथेनि), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+. ध्रुमि-लोग : निम्नलिखित अरन्धामे शब्दसँ ध्रुमि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फियान्नी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूचक छिन रा रिकारी ( / २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतोक ।

(ख) पुरकानिक व्रत आय (आए) प्रत्यामे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, ऋदा लोग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उच्चारण फियान्नापद, सङ्गा, ओ विशेषा तीणुमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : देसवि मारिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मारिनि छनि गेन ।

(घ) वर्तमान व्रतसुक्त अन्तिम त वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठे अछि, रजे अछि, गरै अछि ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(७) फ्रियापदक अरसाण गक, उंक, एंक तथा हीकमे ब्रुणु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिठे, होग ।

(८) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक जोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गोनह, बहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गोन२, बग, बघि, ले ।

९. ध्रुमि आनासुवा : कोला-कोला सुव-ध्रुमि अपना जगहसँ हष्टि क२ दोसव ठाम टनि जागत अछि । खाम क२ जान्न ग आ उंक सङ्ग्रहमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ गोन शिष्टक मया रा अस्तमे जूँ दान्न ग रा उँ आरैए तँ ओकव ध्रुमि आनासुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- भेनि (भेगल), पाणि (पागल), दानि (दागल), माष्टि (मागष्टि), काडु (काडुड), मान्नु (माडुस) आदि । ह्रदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निखम नागु बहि होगत अछि । जेना- बघिकेँ बगम आ सुवागिकेँ सुवाडुस बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनसु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ( )क आरंभकता बहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अस्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि । ह्रदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निखम अन्वसाव हनसुरिणीष बाखन गोन अछि । ह्रदा र्वाकवण सङ्ग्रही प्रयोजक गोन अवारंभक स्थानपर कतहू-कतहू हनसु देन गोन अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली लेखक प्राटिन आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीटिन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्प-रिगाम कएन गोन अछि । स्थल आ समयमे रँचतक सङ्ग्रहि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरंरना हिसारसँ र्प-रिगाम गिनाउन गोन अछि । रतिसाण समयमे मैथिली माह्रभायी पर्यन्तकेँ आण भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेखन करै२ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापर ध्यान देन गोन अछि । तखन मैथिली भाषाक गुन विशेषता सभ फुटित बहि होगक, ताहु दिस लेखक-मन्डन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक कहब छनि जे सवनताक अन्वसङ्गामे एहन अरन्था किम्व ल आरं२ देरौक टाली जे भाषाक विशेषता छहिये पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक धारणाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ निर्धारित)

### १.२. मैथिली अकादमी, षष्ठ्या द्वाव निर्धारित मैथिली लेखन-गोरी

१. जे शिष्ट, मैथिली-साहित्यक प्राटिन कानसँ आग धरि जाहि रतनीमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रतनीमे लिखन जाग- उँदाहवणार्थ-

ग्राह

एखन

ठास



जकब, तकब  
तनिकब  
अडि

अग्राह  
अखल, अखनि, एथेल, अखनी  
ठिमा, ठिना, ठमा  
जेकब, तेकब  
तिनकब। (रैकपिक कर्पे ग्राह)  
अड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकपिकतया अगनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन। जा बहन अडि, जाय बहन अडि, ज५ बहन अडि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कब५ गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनि स्थानमे 'ष' लिखन जाय सकैत अडि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण गेन हो। यथा- देथेत, डुलोक, लौखा, डोक गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कर्पे प्रयुक्त होयत: जेत, सैह, ग५ह, उ५ह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व गकारांत शब्दमे 'ग' के ब्रह्म कवरि सामान्यतः अग्राह धिक। यथा- ग्राह देथि अरैह, मानिनि गेलि (सम्यय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र शब्द 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे 'ँ' यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्पे 'ए' रा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन रा क५न, अयनाह रा अ५नाह, जाय रा ज५य गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीट जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अडि तकवा लेखमे स्थान रैकपिक कर्पे देन जाय। यथा- धीखा, अडिखा, रिखाह, रा धीया, अडिया, रियाह।

९. सावर्णमिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथार्थमे 'ए' लिखन जाय रा सावर्णमिक स्व। यथा:- मै५ग, कनि५ग, किवतनि५ग रा मै५ाँ, कनि५ाँ, किवतनि५ाँ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्प ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। मे मे अक्षुब्ध बरिथा लज्जा धिक। 'क' क रैकपिक कर्प 'केव' बाखन जा सकैत अडि।

११. पुरिकाजिक फ्रियागदक रौद 'कय' रा 'क५' अरय रैकपिक कर्पे नगाउन जा सकैत अडि। यथा:- देथि कय रा देथि क५।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय।

१३. अर्द्ध 'ष' ओ अर्द्ध 'श' क रँदना अक्षुब्ध बरि लिखन जाय, किंतु डागाक स्वरिबार्थ अर्द्ध 'उ' , 'ए', तथा 'ण' क रँदना अक्षुब्ध लिखन जा सकैत अडि। यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अक्षन रा अचन, कर्ष रा कर्ठ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४. हनत छिन् निश्चयतः नगाउन जाय, किन्तु रिभञ्जिक संग अकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-  
श्रीमान्, किन्तु श्रीमानक ।

१५. मत्त एकन कावक छिन् मोहमे सँठी क निखन जाय, हँठी क नहि, मंगुअ रिभञ्जिक हेतु हवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अणुनामिककेँ चन्द्ररिन्दु द्वारा राउ कएन जाय । पर्वतु रुद्राक सुरिधार्थ हि समाण जईन मात्रापव अणुनामिक प्रयोग चन्द्ररिन्दुक रँदना कएन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पामीसँ ( । ) मुटित कएन जाय ।

१८. मगतु पद सँठी क निखन जाय, रा हागफेणसँ जोडि क , हँठी क नहि ।

१९. निख तथा दिख मोहमे रीकावी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरनागवी कगमे बाखन जाय ।

२१. किन्तु धुनिक वेव नरीन छिन् रँनरौउव जाय । जा अ नहि रँनव अछि तँरत एहि दुनु धुनिक रँदना पुरिबत अथ/ आथ अथ/ आथ/ आउ/ अउ निखन जाय । आकि ए रा ओ सँ राउ कएव जाय ।

ह.- लोारिन्द मा ११/१३ श्रीकांतु अरुव ११/१३ सुरेन्द्र मा अरुव ११/०१/१३

## २. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठकेय

### २.१. उँचावा निर्देने: (रोलेट कएव कए ज्ञाह):-

दनु न क उँचावामे दाँतमे जीह सँठत- जेना रौजू नाम , रुद्रा न क उँचावामे जीह मुर्धामे सँठत (ले सँठैए तँ उँचावा दोय अछि)- जेना रौजू गणेशि । तानरा नेमे जीह तानुसँ , षमे मुर्धामे आ दनु ममे दाँतसँ सँठत । निगाँ, मत्त आ मोया रौजि क२ देखु । मैथिलीमे ष केँ रोदिक संकृत जकाँ अ सेनो उँचवित कएन जागत अछि, जेना रयाँ, दोय । य अलको स्याणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ न ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञेय आ

गडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचावा रँ, ने क उँचावा स आ य क उँचावा ज सेनो होगत अछि ।

ओहिना दनु ग रेशीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि कावा देरनागवीमे आ मिथिलाक्षरमे दनु ग अक्षरक पहिल निखलो जागत आ रौजलो जएरौक चाली । कावा जे हिन्दीमे एकव दोयपूर्ण उँचावा होगत अछि (निखन तँ पहिल जागत अछि रुद्रा रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोयक कावा हय मत्त ओकव उँचावा दोयपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचावा)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचावा)

गहँटि- ग हँ ग ट (उँचावा)



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आरिं अ आ ग ज ए ँ उ ष अः म ँ सभ लेन माना सेहो अछि, दूदा एंमे ज ए उ ष अः म केँ सगुआकब कगमे गनत कगमे प्रशुअ आ उँचवित कथन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँचवित कवरि । आ देथियौ- ए लेन देथिउ क प्रयोग अगुटित । दूदा देथिअ लेन देथियौ अगुटित । कू सँ ह धवि अ समितित लेनासँ कू सँ ह रँलेत अछि, दूदा उँचाका कान हननु हाउ गेहूँक अस्तुक उँचाकाक प्रवृत्ति रँठन अछि, दूदा ह्य जखन मलोजमे जू अस्तुमे रँजेत छी, तखना प्रकाका लोककेँ रँजेत सुगरँहि- मलोज२, रातुरमे उ अ हाउ जू = जू रँजे छथि ।

ह्यव तू अछि जू आ ए१ क सगुअ दूदा गनत उँचाका लोगत अछि- गा । ओहिना फ अछि कू आ य क सगुअ दूदा उँचाका लोगत अछि छ । ह्यव गी आ व क सगुअ अछि त्री ( जेना त्रीकिक) आ स आ व क सगुअ अछि त्र (जेना त्रिस) । त्र लेन त+व ।

उँचाकाक आँडियो हागन विदेह आँकाँगर <http://www.videha.co.in/> गव उँगनट्ट अछि । ह्यव केँ / सँ / गव पूरि अकबसँ सँ क२ लिखू दूदा टँ / क२ लँ क२ । एंमे सँ मे गहिन सँ क२ लिखू आ रँदरँना लँ क२ । अकक रँद षी लिखू सँ क२ दूदा अगु ठाँग षी लिखू लँ क२ जेना

**डलँ दूदा सभ षी । ह्यव उअ य सातय लिखू- डलँ सातय लँ । घवरँवमे रँवा दूदा घवरँवमे रावँ प्रशुअ कक ।**

बहए-

**बहँ दूदा सकैए (उँचाका सकैए-ए) ।**

दूदा कथला कान बहए आ बहँ मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्ना जगहमे पाँकिंग कवरँक अत्रास बहँ ओकवा । प्रुढनागव गता नागन जे तुनतुन नामा जू ड्राँगरव कगलँ बसक पाँकिंगमे काज कवेत बहए ।

डलँ, डलँ मे सेहो ए तवहक लेन । डलँ क उँचाका डलँ-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँचाका सँजोगल)

केँ/ क२

केव- क (

**केव क प्रयोग गगमे लँ कक , गगमे क२ सकै छी । )**

क (जेना बागक)

**बागक आ सँग (उँचाका बाग के / बाग क२ सेहो)**

**सँ- स२ (उँचाका)**

चन्द्ररिन्दू आ अन्नबाव- अन्नबावमे कँठ धरि प्रयोग लोगत अछि दूदा चन्द्ररिन्दूमे लँ । चन्द्ररिन्दूमे कलक एकावक सेहो उँचाका लोगत अछि- जेना बागसँ- (उँचाका बाग स२) बागकेँ- (उँचाका बाग क२/ बाग के सेहो) ।

केँ जेना बागकेँ लेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ





मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

क जेना बायक भेन हिन्दीक का ( बाय का) बाय का= बायक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कब ( जा कब) जा कब= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाय से) बाय से= बायसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक मोड़, सरलक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसब अर्धे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहलक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नघि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओर क रँदनामे ह्र जेना मह्रपूर्ण (महओरपूर्ण ले) जतए अर्थ रँदलि जाए ओतहि मात्र तीस अक्षरक सँश्रुआक्षरक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उँचावण आसागीसँ सञ्चर ले) । ऋदा सरोत्तम (सरोत्तम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडिमे/ पोडि लेन/ पोडि लेन

पोडिए/ पोडि/ (अर्थ परिवर्तन) पोडि/ पोडि

ओ लोकनि ( ठी क२, ओ से रिंकावी ले)

ओअ/ ओहि

ओहि/

ओहि लेन/ ओही व२

जवरोँ/ रँसरोँ

गँचजगँ

देथियोक/ (देथिओक ले- तहिना अ से द्रव्य आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुद्धित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

हेत / हत

नघि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौसे/ सौसे

रँच /



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

**बेटी (सोबाउव)**

गाए (गाँव बहि), ऋदा गाँवक दूध (गाँवक दूध ले । )

**बहलौं गहिवतेँ**

**हमली/ अली**

सरें - सभ

**सरेंहक - सभहक**

**धवि - तक**

**गग- राँत**

**बूमरें - समयरें**

**बूमलौं समयलौं** बूमलहँ - समयलहँ

**हमराँ आव - हम सभ**

**आकि- आ कि**

सकेँड/ कबेँड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

**होअल/ होनि**

**जाअल** (जानि ले, जेना देन जाअल) ऋदा **जानि-बूमि** (अर्थ गविरूतन)

**गअल/ जाअल**

**आँड/ जाँड/ आँड/ जाँड**

ये, केँ, सँ, गव (मेहँसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मेहँसँ सँ क२) ऋदा दूँ राँ रेंसी विभक्ति सँग बहनागव गहिन विभक्ति ठाँकेँ सँ। जेना **एमे सँ** ।

**एकठी , दूठी** (ऋदा क२ ठाँ)

बिंकारीक प्रयोग मेहँसँ अन्तमे, बीचमे अन्तमे कएँ ले । आकावाञ्च आ अन्तमे अ क रौद बिंकारीक प्रयोग ले (जेना **दिअ**

**. आ/ दिअ , आ, आ ले )**

अपेन्द्रोपनीक प्रयोग बिंकारीक रैदनामे कवरें अन्वित आ मात्र यगँठक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-  
उना बिंकारीक संयुत क२ अग्रग्रह कलन जागत अछि आ रँनी आ उँचावा दूनु ठाम एकव लोग बहेत अछि/ बहि सकेँत अछि (उँचावणमे लोग बहिये अछि) । ऋदा अपेन्द्रोपनी सेहो अर्थेजोमे गमेसिर केसमे लोगत अछि आ हँचमे मेहँसँमे जतए एकव प्रयोग लोगत अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उँचावण बेजोस डेठव लोगत अछि, माले अपेन्द्रोपनी अरकामे ले दैत अछि रवण जोडेते अछि, से एकव प्रयोग बिंकारीक रैदना देनाग तकनीकी कएँ सेहो अन्वित) ।



मनुषीभिः संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अगसे, एहिसे/ असे

जगसे, जाहिसे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) से (अस्त्राव बहित)

भर

से

दर

तै (तै, त लै)

सै (सर स लै)

गाछ ठव

गाछ वग

साँस खन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगसे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसै/ जगले

अ/अथ जेना- अ कावण/ असै/ अगले/ रुदा एकव एकठी खास प्रयोग- नावति कतेक दिससँ कहैत बहैत अग

लै/वथ जेना लैसै/ नगले/ लै दुखारे

नहै/ लौ

गेलौ/ ललौ/ ललै/ गेलहूँ/ लेलहूँ/ लेल

जग/ जाहि/ जे

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जेठाम

एहि/ अहि

अग (बोझक अतमे ब्राह्मण / अ)

अगड/ अछि अड



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

भलेही/ भवहि

ते/ तँग/ तँ

जधरै/ जधरै

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

डहि/ डन्हि ...

समय गेरुदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे द्दम  
आ रिभक्ति जूठल द्दमे जना द्दमेसँ द्दमेमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/ अग/ अँ

अगड/ अडि/ अँड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीर

भले/ भलेही/

भवहि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ते/ तँ/ तँ

जाएँ/ जाँ

नग/ नै

ढग/ ढै

बहि/ बै/ बग

गग/

लै

डनि/ डनै

चूकन अडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पन्न पाठक्य

नीटाँक सूटीमे देत रिक्पमेसँ लैंग्ज एडीटव द्वावा कोष कग चूकन जेरौक चाली:

लौलेड कएत कग ग्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँरँना, हेमरँना/ होयरँक/ होरँयरँक / होयरँक

२. आ/आ२

आ

३. क जेले/क२ जेले/क३ जेले/क४ जेले/न/न२/न३/न४

४. भ' गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ४

गेन

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव३ गेनाह/कव४ गेनाह

६.

मिथ/दिथ मिथ,दिय,मिथ,दिय/

७. कव' रँना/कव२ रँना/ कव३ रँना कवँरँना/क'व' रँना /

कवँरँना

८. रँना रना (शुकय), रानी (सूनी) ९



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

### धाँडव धाँड

१०. धाँडः धाँड

११. दुःखं दुःखं १

२. छलि गेल छव लोव/टेल गेल

१३. देवविह देवकिल, देवविह

१४.

### देखविह देखविह/ देखविह

१३. छविह/ छविह छविह/ छविह/ छविह

१३. छविह/देह छविह/देह

११. एखला

### धखला

१४.

### रैठवि रैठवि रैठवि

१६. ७/७२(सर्वांग) ७

२०

७ (सर्वांग) ७/७२

२१. र्हावि/र्हावि र्हावि/र्हावि

२२.

### जे जे/जे२ २३. ना-बुख ना-बुख

२४. केवहि/केवहि/कवलि

२३. तखत/ तखत

२६. जा

### बलव/जाय बलव/जाय बलव

२१. निकव/निकव

### वागव/ वगव रैठवि/ रैठवि वागव/ वगव निकव/रैठवि वागव

२४. ७त/ जत/ जत/ ७त/ जत/ ७त



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२९.

**की खुबव जे कि खुबव जे**

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(मोण पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

**यदि (मोण)**

३२. गलो/ ओलो

३३.

**हंस/ हंस हंस**

३४. लो खाकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सान्-सन्व सान-सन्व

३६. डह/ सात ड/डः/सात

३७.

**की की/ की२ (देवीकारणमे २ रजित)**

३८. जराँ जराँ

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दमाण दिमि दमाण दिमि/दमाण दिस

४१.

**. लावह गवह/गवह**

४२. किड खाव किड ठव/ किड खाव

४३. जाग डव जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेँ जागत डव जेँ जाग डव गहुँटा/ जेँ जागत डव

४५.

**जराँ (शरा)/ जराँ(शोली)**

४६. वग/ वग क/ क२/ वग क / व२ क२/ व२ क३

४७. व/व२ क३/

**क३**



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४५. एथल / एथल / अथल / अथल

४६.

**अथिले अथिले**

५०. गथिव गथिव

५१.

**धव गीव कनार्ध धव गीव कनार्ध/कनार्ध**

५२. जेकाँ जेकाँ

**जकाँ**

५३. तहिन तहिन

५४. एकव अकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

**रैहिन-रैहिन**

५८. नहि/ लै

५९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

६०. तँ/ त २ तय/तय

६१. तैयारी मे जेठ-भाय/तै, जेठ-भाय/जय

६२. पितीमे दु भाग/भाय/भाय

६३. अ पौथी दु भाय/भाय/भाय। यारत जारत

६४. माय मे / माय दूय मायक मयत

६५. देहि/ दय दय/ दयहि/ दयहि दहि/ दैहि

६६. द/ द२/ द२

६७. उ (संयोजक) उ२ (सरनाय)

६८. तका कय तकाय तकाय

६९. पैले (on foot) पयले कयक/ कैक





१०.

**तहूमे तहूमे**

११.

**गुनीक**

१२.

**रौन कय कए / क२**

१३. रौनबाग/रौनबाग

१४. रौन

१५.

**दिवका दिवका**

१६.

**ततहिँ**

१७. गवरौवहि/ गवरौवहि

**गवरौवहि/ गवरौवहि**

१८. रौन रौन

१९.

**छेह छेह(अशुक्र)**

२०. जे जे

२१.

**. सो/ के सो/के**

२२. अशुक्रता अशुक्रता

२३. भूमिहार भूमिहार

२४. सुख

**/ सुखक/ सुख**

२५. सठलक सठलक २६.

**दुख**



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१. कवगयो/उ कवेयो ल देवक /कवियो-कवगयो

११. गुरावि

गुराव

१२. सगड १-साँछी

सगड १-साँछी

२०. गखल-गखल पोले-पोले

२१. खेवखेवक

२२. खेखेवक

२३. वगा

२४. लेख- ले लेख

२५. ब्रूमव ब्रूमव

२६.

ब्रूमव (सर्वोपल अर्थमे)

२७. येह यखल / गखल/ सेह/ सखल

२८. ताविय

२९. अखलाय- अखलाग/ अखलाग/ एलाग

३०. निख- निख

३१.

बिबु बिब

३२. खखल खखल

३३.

खखल (in different sense)-last word of sentence

३४. छत गव खाँयि खखल

३५.

ल

३६. खेवाय (play) खेवाय



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१०१. शिकायत- शिकायत

१०४.

**ठग- ठग**

१०९

**पठ- पठ**

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. वाकस- वाकसे

११२. लोए/ लोय लोए

११३. खडवन्त-

**उक्त**

११४. बुँसेवहि (different meaning- got understand)

११५. बुँसएवहि/बुँसेवनि/ बुँसयवहि (understand himself)

११६. छवि- छव/ छवि लव

११७. खयाए- खयाय

११८.

**मोष पाँचवबिह/ मोष पाँचवबिनि/ मोष पाँचवबिह**

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

**वग वग**

१२१. जवनाए

१२२. जवनाए जवनाए- जवनाए/

**जवनाए**

१२३. लोएत

१२४.

**गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि**

१२५.



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

### टिखेट- (to test) टिखेट

१२७. कबखयो (willing to do) करेयो

१२१. जेकरवा- जकरवा

१२४. तकवा- तेकरवा

१२७.

### बिदेसब खुलमे/ बिदेसबे खुलमे

१३०. कबरैयनहुँ/ कबरैएनहुँ/ कबरैएनहुँ कबरैयौ

१३१.

### हाबिक (उचरवण लखबक)

१३२. ओखन रजन अखसोच/ अखसोस कागत/ कागटा/ कागज

१३३. आबे भाग/ आब-भाला

१३४. गिटा / गिटाया/ गिटाए

१३७. नए१/ ल

१३७. रैल नए१

### (ले) गिटा ज्ञाय

१३१. तकल ल (नए१) कहैत अछि। कहै/ सुलै देबै छव दूदा कहैत-कहैत/ सुलैत-सुलैत/ देखैत-देखैत

१३४.

### कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३७. कमाग-धमाग/ कमाग- धमाग

१४०

### वग वग

१४१. खेवाग (for playing)

१४२.

### डबिहा डबिष

१४३.

### लोगत लोग



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४४. का किये / केउ

१४३.

**कगे (hair)**

१४३.

**कस (court -case)**

१४१

**कैलनाथ/ कैलनाथ/ कैलनाथ**

१४४. कैलनाथ

१४९. ककरी कर्मी

१३०. चवटा चटा

१३१. कर्म कर्म

१३२. डुराँरै/ डुराँरौ/ डुराँरि डुराँरै/ डुराँरै

१३३. एथुलका/

**थुलका**

१३४. वष/ विथ (राकाक थिति गेह)- वर

१३३. कथक/

**कथक**

१३३. गवरी गर्ग

१३१

**रवदी रदी**

१३४. सुना लोवाक सुना/सुना२

१३९. एनाथ-लोनाथ

१३०.

**लेना ल खेववलि लेना ल खेववलि**

१३५. नदी / ले

१३२.



## छवां छवां

१७३. कतल/ कतौ कली

१७४. उमरिगव-उमरगव उमरगव

१७५. भरिगव

१७६. धोल/धोखल धोखल

१७७. गग/गग

१७८.

## क क

१७९. दरर/दरर

१८०. गग

१८१.

## धरि तर

१८२.

## धुरि लोष्ट

१८३. खोखल

१८४. रर

१८५. लो/ लो

१८६. लोहि( गगमे गग)

१८७. लोहि / लोहि

१८८.

## कवरगग कवरगगे

१८९. एकल

१९०. कवतधि / कवतधि

१९१.

## गगुष्टि गगुष्टि

१९२. बाखलहि बखलहि/ बखलधि



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+३.

**वगवहि/ वगवति/ वागवहि**

१+४.

**वृत्ति (उँटावती वृत्ति)**

१+३. वृत्ति (उँटावती वृत्ति)

१+७. एवति/ लावति

१+१. वित्तोल/ वित्तोल/

**वित्तोल**

१+१. कवरौवहि/ कवरौवति

**कवरौवहि/ कवरौवति**

१+२. कवणवहि/ कवणवति

१+०.

**खाति/ ति**

१+५. गृह्णति

**गृह्णति**

१+२. रौंती/ जवाय/ जवाय/ जवा (आणि नगा)

१+३.

**से से**

१+४.

**हाँ से हाँ (हाँसे हाँ वित्तित्तमे ल्हाँ कव)**

१+३. ल्हाँ ल्हाँ

१+७. फणव(spacious) ल्हाँ

१+१. हायतहि/ हायतहि/ हायतति/ हायतति/ हायतति

१+१. हाथ मट्टियाँ/ हाथ मट्टियाँ/ हाथ मट्टियाँ

१+७. हाँ हाँ

२+०. देखाँ/ देखाँ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२०१. देखावे

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

**सालेरे सालरे**

२०४. लालेह/ लालहि/ लालि

२०५. लेखीक/ लेखीक

२०६. केजा/ कएजह/ कएजो/ केज

२०७. किड न किड/

**किड ल किड**

२०८. घुमेजह/ घुमाउजह/ घुमेजो

२०९. एजाक/ अएजाक

२१०. अः/ अह

२११. जय/

**जय (अर्थ-गविरुतन) २१२. कनीक/ कलक**

२१३. सरलक/ सलक

२१४. गिजा२/ गिजा

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

**जा**

२१७. आ२/ आ

२१८. भ२ /भ' (१ शक्यक कमीक द्यातक)

२१९. निप्रय/ नियम

२२०

**लेखीअव/ लेखीयव**

२२१. गहिव अफव ठा रीदक/ रीदक ठ

२२२. तहि/तहि/ तमी/ तै





मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२२३. कहि/ कही

२२४. ठँअ

ठै / तअ

२२५. नँअ/ नअ नयिअ/ नहि/ले

२२६. हे/ हए / एवीहँ

२२७. डयिअ/ डै/ डैक / डअ

२२८. दृष्टिअँ/ दृष्टियँ

२२९. अँ (come)/ अँ२ (conjunction)

२३०.

अँ (conjunction)/ अँ२ (come)

२३१. कला/ कलाँ, काना/कना

२३२. लोह-लवहि-लवनि

२३३. लोह-लोह

२३४. कलौ- कलौ-कलौ/कलौ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. कल- कल

२३७. अँ२ (come)-अँ (conjunction-and)/अँ । आँ-आँ /आँह-आँह

२३८. लवत-लवत

२३९. घुमनहँ-घुमनहँ- घुमनहँ

२४०. एवक- अनाक

२४१. लोहि- लोहि/ लोहि

२४२. उ-बाय उ अनाक रीट(conjunction), उ२ कहक (he said)/उ

२४३. की हए/ कानी अएवी हए/ की ह । की हअ

२४४. दृष्टिअँ/ दृष्टियँ

२४५.

. गोमिअ सभएव

२४६. ठै / ठँअ/ तयिअ/ तहँ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४१. जौ

। जौं जौं

२४४. सभ/ सरौं

२४६. सभक/ सरौंक

२४०. कहि/ कही

२४१. कला/ काला/ कलहूँ/

२४२. शबरकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२४३. कला/ कला/ कला/ कला

२४४. थः/ थः

२४५. जलौ/ जलौ

२४६. गेवनि/

**गेवाह (अर्थ परिवर्तन)**

२४७. केवहि/ केवहि/ केवनि/

२४८. दया/ दया/ दया (अर्थ परिवर्तन)

२४९. कनीक/ कनीक/ कनी-मनी

२५०. गठवहि गठवनि/ गठवगण/ गठवगणहि/ गठवोवनि/

२५१. निथय/ निथय

२५२. हेबईथव/ हेबईथव

**२५३. गहिव अरुव बहल ठा रीठमे बहल ठ**

२५४. आकावास्तुमे रिकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातरीक प्रयोग शक्य तकराकी न्यूनताक परिचायक  
उकव रौदना अरुगह (रिकारी) क प्रयोग उचित

२५५. केव (पद्यमे ग्राह) / -क/ क२/ के

२५६. डैहि- डैहि

२५७. दलौ/ दलौ

२५८. लोएत/ लोएत

२५९. जगत/ जगत/

२६०. थगत/ थगत/ थगत





मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२९३. ग२/ लो (meaning different - जनरोँ ग२)

२९४. स२/ सँ (रुदा द२, न२)

२९३. ७. ब्र (तीन अक्षरक मेल रँदना प्रत्यक्षिक एक आ एकरी दोसरक उँगयोग) आदिक रँदना ह्र आदि । मह ७. ब्र/ मह ७. कर्ता/ कर्ता आदिमे त संशुद्धक कोला आरंभकता मैथिलीमे ले अछि । **ब्र ७. ब्र**

२९७. रौनी/ रौनी

२९१. रौनी/ रौनी **रौनी/ रौनी** (बहेरौनी)

२९१+

**रौनी/ (रौनीरौनी)**

२९९. राती/ राती

३००. अशुबिष्टिय/ अशुबिष्टिय

३०५. समथ/ समथ

३०२. समथक/ समथक

३०२. वारी/ वारी (

**वारी/ वारी**)

३०३. वागव/ वागव

३०४. वरी/ वरी

३०३. वाथक/ वाथक

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०१. पशुताग/ पशुताग

३०४. २ केव रारहाव शिद्धक अशुभमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३०९. कहत/ कहत

३१०.

**बह (बह)/ बह (बह) (meaning different )**

३१५. तागति/ तागति

३१२. खवाग/ खवाग

३१३. रौनी/ रौनी/ रौनी

३१४. जार्ति/ जार्ति



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. कागज/ कागज/ कागज

३३. गिले (meaning different - swallow)/ गिले (थस्य)

३१. बर्दिया/ बर्दिया

### DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसवी साल)

#### **Marriage Days:**

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

#### **Upanayana Days:**

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

#### **Dviragaman Din:**

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.



मनुषीभि संकृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Febr uar y 2014- 16, 17, 19, 20.

Mar ch 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

Apr il 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

### ***Mundan Din:***

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

Januar y 2014- 16, 17.

Febr uar y 2014- 6, 10, 19, 20.

Mar ch 2014- 5, 12.

Apr il 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

### **FESTIVALS OF MTHI LA (2013-14)**

Mauna Panchami -27 Jul y

Madhusr avani - 9 August

Nag Panchami - 11 August

Raksha Bandhan- 21 Aug

Kr i shnast ami - 28 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 5 Sept ember

Har t al i ka Teej - 8 Sept ember

Chaut hChandr a-8 Sept ember



Vi shwakarma Pooja - 17 September  
Anant Caturdashi - 18 Sep  
Pitri Paksha begins - 20 Sep  
Jimootavahan Vrata/ Jitika - 27 Sep  
Matri Navami - 28 Sep  
Kalashstapan - 5 October  
Belnauti - 10 October  
Patrika Pravesh - 11 October  
Mahastami - 12 October  
Maha Navami - 13 October  
Vijaya Dashami - 14 October  
Kojagara - 18 Oct  
Dhanteras - 1 November  
Diyaabati, shyama pooja - 3 November  
Annakoota/ Govardhana Pooja - 4 November  
Bhratri dwitika/ Chitrakoota Pooja - 5 November  
Chhatika - 8 November  
Sama Poojarambh - 9 November  
Devottan Ekadashi - 13 November  
ravi vratarambh - 17 November  
Navanna parvan - 20 November  
Kartik Poorni - Sama Visarjan - 2 December  
Vivaha Panchmi - 7 December



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Makar a/ Teel a Sankranti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a- 4 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y

Mahashi var at ri -27 Febr uar y

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Trayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri -bar asai t - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Har i vasar Vr at a- 9 Jul y

Shr ee Guru Poorni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१०पत्रिकाक सबठो पुवाष अंक ब्रैल-बिदेह ज्ञ, तिवहूता आ देरणागरी कसमे Vi deha e j ournal 's  
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ज्ञअंक ३.०पत्रिकाक पहिल -

बिदेह ज्ञा मँ आगाँक अंक३.०पत्रिकाक -

[ht t p://si tes.goo gl e.c om/a/vi deha.c om/vi deha/](http://sites.google.com/a/videha.com/videha/)





मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi ve-part-i/>  
<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi ve-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डिप्लोम संकलन मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**बिदेहक एहि सब सल्लयोगी विकसव सेहो एक लेब जाई ।**

७. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानरूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित अग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पुरि-कप "तामसविक गाढ" :

<http://gaiendrat hakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवरूता (मिथिलासक) जानरूत (बैंगल)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:रैवत: मैथिली रैवतमे: पत्तिन रैव रिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४.VI DEHA I ST MAI THIL I FORTNI GHTLY EJ OURNAL ARCHI VE

<http://videha-archiv.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मैथिली प्पाथीक आर्कांगर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका ऑडियो आर्कांगर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका रीडियो आर्कांगर

<http://videha-video.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मिथिना चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिन आर मिथिना (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.प्रकाशिन त्रुति.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१ <http://groups.google.com/group/videha>

२२ [http://groups.yahoo.com/group/VI\\_DEHA/](http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/)

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेक

[http://gajendratihakur123.blogspot.com](http://gajendratihakur123.blogspot.com/)

२४. लणा लुठका


<http://mangan-khabas.blogspot.com/>




मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३. बिदेह लेडियोकरिता आदिक पहिल प्गोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio

२१.  Join official Videha facebook group.

२४. बिदेह मैथिली बाँध उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समादिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आथव

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-haike.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना





मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site  
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to  
[shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम बहि अछि ततए संपादकाधीन । विदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: गिर कमार सा, बाग बिकास साहू आ कृष्णाजी (मलाज कमार कर्मा) । भाषा-सम्पादन: गजेन्द्र कमार सा आ पद्मिका विद्यानन्द सा । कवि-सम्पादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बग्गि लेखा मिश्र । सम्पादक-लोक-अनुसंधान: सा. ज्ञाता कर्मा आ सा. बाजरी कमार कर्मा । सम्पादक-नाटक-वैगम-चमत्कार- रोज ठाकुर । सम्पादक-सूचना-सम्पर्क-समाद- पुष्प मंडल आ शिखा सा । सम्पादक-अनुवाद विभाग- विनीत उषा ।

बचनाकाब अगुन मूलिक आ अग्रकाशित बचना (जकर मूलिकताक संपूर्ण उतुवदासिह लेखक पाक मर्या डहि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) के मेल अटैचमेण्टक रुपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अगुन सक्रिप्ट परिचय आ अगुन फूल कएन गेन लोअर पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे ठांगण बहल, जे ङ बचना मूलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिक हेतु विदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेल प्राप्त होयबोक बाद मथामन्तब शीघ्र ( सात दिनक तीतब) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । ' विदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संरहित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकाले शीमाति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिके ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार स्वकृत । विदेहमे प्रकाशित मन्त्रा बचना आ आर्काइवरक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशित किरा आर्काइवरक उपयोगक अघिकाब किनबोक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब संपर्क कक । एहि सांगठिके शीति सा ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बग्गि शिखा द्वारा डिजाइन कएन गेन ।



सिंहिबहु



